भूमिका ।

कविवर पं० टेकचन्द जी का यह पञ्चमेरु और नन्दीश्वर पूजन विधान कैसा है, यह बतलाना मानों सूर्य को दीपक दिखलाना है। इसमें तेगुरु की चाल, वीर जिनन्द की चाल और सुणयणानन्द आदि नामके अनेक नये छन्द हैं। इसकी कविता का आनन्द और पदों का लालित्य भावुक पढ़ने वालों के मनको मोह लेता है।

हमको खेद है कि इतनी सुन्दर पुस्तक की केवल दो ही प्रतियाँ (जिनमें से दूसरी प्रति पहिली की ही प्रतिलिपि थी।) मिलने के कारण से हम इसका सम्पादन यथोचित रीति से न कर सके। यद्यपि हमने मूलप्रति के छन्दोभङ्ग और स्थान २ पर अनुपयुक्त शब्द आदि दूषणों को निकालने का कम प्रयत्न नहीं किया तथापि बहुत सम्भव है कि इसमें प्रेस सम्बन्धी अशुद्धियाँ रह गई हों। अतः पाठकों से प्रार्थना है कि वह ऐसे अवसर पर सुधार कर पढ़ें तथा इसका सूचना प्रकाशक को भी दे दिया करें, जिससे अगली आवृत्ति में वह अशुद्धियाँ न होने पावें।

'कविवर ने अपने जन्म से किस भूमि को अलंकृत किया था?' 'वह किस समय में हुए थे?' आदि प्रश्नों के उत्तर बहुत प्रयत्न करने पर भी नहीं मिल सके। अतः इस विषय में हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं। यदि कुछ मिल सका तो अगली आवृत्ति में देने का यत्न किया जावेगा।

आपके बनाये हुए कर्म दहन पाठ, पञ्च परमेष्ठी पाठ और पञ्च कल्याणक पाठ आदि

और भी कई ग्रन्थ हैं। जिनमें से अभीतक केवल एक कर्म दहन पाठ ही बम्बई से छपकर प्रकाशित हुआ था जो कि निकलते ही हाथों हाथ बिक गया। पञ्चपरमेष्ठी पाठ शीघ्र ही 'जैन भारती भवन बनारस' से छपकर प्रकाशित होने वाला है, जिससे पाठक कवि की कविता के विषय में और भी निश्चय कर सकेंगे।

इस ग्रन्थ का विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है, अन्तर केवल इतनाही है कि इसमें नंदीश्वर द्वीप तक के सभी अकृत्यम जिन चैत्यालयों के अर्घ दिये हुए हैं। यह पुस्तक मांडला बनाकर पूजन करने वालों के भी बड़े काम की है, क्योंकि इसमें कोई स्थान छूटने नहीं पाया है।

अन्त में मेरी पाठकों से यह प्रार्थना है कि मुझको न तो 'धर्मशास्त्र' और न साहित्य का ही पुरे तोरसे ज्ञान है। मैंने केवल टका भाव से प्रेरित होकर यह कार्य किया है। अतः इसमें जो कुछ मोटी २ गलतियाँ हो उनको मेरी गलतियाँ समझ कर क्षमा करें।

भदैनी-बनारस।
मिति-चैत्र शुक्ल १ सं० १९८१ वि०
ता० ५ अपरैल सन् १९२४ ई०

चन्द्रशेखर शास्त्री
काव्यसाहित्य तीर्थाचार्य
प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय।

हम काशी के रईस श्रीयुत बाबू रघुनाथ दासजी जोहरी को कोटिशः धन्यवाद देते हैं जिनसे हमको समय २ पर सहायता मिलती रहती है। तथा आपने पुस्तकालय के लिये स्थान भी दे रक्खा है।

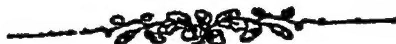
प्रकाशक।

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः ।

कविवरटेकचन्द्रजीकृत

पञ्चमेरु और नंदीश्वर पूजन विधान



अथ व्रतमाहात्म्यवर्णन

(सर्वदीर्घ वेसरी छंद)

वानी पूजों देवा केरी । तातैं टूटे मोहा जेरी ॥
साधा ध्याऊं सांचा भाऊं । या भौ माही नाहीं आऊँ॥१॥

सर्वदीर्घ जोगीरासाकी चाल—

देवा सेवो सो या भौ में आवा जावो हारै
आपा तार्यो औरै तारै ज्यो नावा औतारै ॥
जाका ध्याना जोगी आना पापा हाना काजै।
ऐसो नाथो द्यो मो साथो भौ भौ साता साजै ॥२॥
साधा साधो जो या भौ में जाकै रागा नाहीं।
आपा साधै प्रानी नावा ध्याना ध्येना माहीं ॥
तापा आपै जापा जापै मोको राखै सोही।
मेरो सीसा याकै पावें नाखो दीना होही ॥३॥
ऐसे देवा याकी वानी साधा तीनो सोही।
मो को ज्ञानो ऐसो दीजौ मो पै राजी होही ॥
तातैं नांदी दीपा पांचों मेरा पूजा सारी।

पूरी हो जावै सो कीजौ ऐसी वांछा म्हारी ।।४।।

वेसरी छंद—या पूजा श्रीपालै कीनी । काया रोगा की खय लीनी ।।
या पूजा सो लोका देवै। जो जीवा नीका है सेवैं ।।५।।

सर्वलघु दोहा—वरत यह सुखकरन लख समाचित कर सिव सहल ।
पहल करम सब नस भजय कर यह वरत जु टहल ।।६।।

चौपाई—यो ब्रत मयणासुंदर करौ । सुभट सातसै को दुख हरौ ।।
ताकर जगमें माहिमा पाय । इम लख भव पूजौ मनलाय ।।७।।

अडिल्ल छंद—

वरस एक में वार तीन यह ब्रत करै। कातिक फागुन सुदी अषाढ विषैं धरै ।।
करै वर्स लग आठ तथा वृष तीन जी। सक्त बड़ीका धार करै परवीन जी।।८।।

सोरठा—शक्त बड़ी धर सोय, करै बहुत दिन भी सही ।
उद्यापन फिर होय, नाहीं ब्रत दूनों करै ।।९।

गीता छंद—पीछै जु शक्ति प्रमाण अपनी द्रव्य तैं पूंजा करै।
उपकरण सुन्दर छत्र चामर लायकें मंदिर धरै ॥
पुस्तक लिखावे दान करुणा देय दीन बुलायजी।
इस रीति धर्म उद्योत ठानै जीव सो शिव पायजी ॥१०॥

पद्धरी छंद—

या विध अनेक माहिमा निधान। यह वरत कहो धुनिमें प्रमाण।
कवि कवलौं गुण भापै अपार। वहु कहिये कहां जग माहिं सार ॥११॥

इति व्रतमहिमा समाप्त।

अथ प्रथमही समुच्चय पूजा

स्थापना (चाल जोगीरासे की)

पांचों मेर महान कनक के तिन पै जिनके थानों।

गिनत असी तिन मांहि बिंब हैं रतन मई पुन खानो ॥

८व खगा तौ जाय जजै वहां हम यहां भावना भावैं

तातैं मेरनके जिन बिंब सु थापन थाप जजावैं ॥१२॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अत्र पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक (चाल जोगीरासे की)

निर्मल मन सो ही जल उज्जल भाजन भाव करायो।

आर्ज्य भाव रस सोही जीवा ता बिन पय धर लायो ॥

वीसी चार सबै जिन मंदिर पांच मेरके जानौं।

सो मैं मन वच काय जजत हौं करन पापको हानौं ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनायजलं नि०

शीतल भाव कियौ शुभ चंदन भक्त गंध को धारी ।
मंद मोह झारी करता मैं भर लायौ सुख कारी ॥
वीसी चार सबै जिन मंदिर पांच मेरुकें जानौं ।
सो मैं मन वच काय जजत हो करन पापको हानौं ॥२॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यःसंसारतापविनाशनायचंदनं नि०

भाव अखंडित उज्जल सोही अक्षत सुभग बनाये ।
नाना भक्त उपाय उक्त तै पुन्य बंध को आये ॥वीसी०॥३॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०॥

भाव प्रफुल्लित फूल बनाये बहुविध भक्ति सुरंगा ।
विनयवान तामें गंध नीकी पुष्पन लायौ चंगा ॥वीसी०॥४॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

परणत परम मनोज्ञ तने मैं शुभ नैवेद्य बनायौ ।
नाना रस नय द्वार घनी यह भक्त भाव कर आयौ ॥ वीसी० ॥५॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः क्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०॥

सम्यक्ज्ञान प्रकाश सकल तत्वन को दीप बनाई ।
हरष सो पातर कीनो ता घर नीकी आरति छाई ॥ वीसी० ॥६॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०॥

अष्ट करम शुभ चंदन पीस्यौ ताकी धूप बनाई ।
धर्म ध्यान बहु तेज अगनि में जारी प्रीति बढ़ाई ॥ वीसी० ॥७॥
ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥

पाप रहत परणाम किए फल समता थाल भराये
आनंद होत सुलेय हाथ में बहुविध जिन गुन गाये ॥ वीसी० ॥८॥
ॐ ह्रीं पचमेरुसंबंध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥

ऐसे आठों द्रव्य मनोहर ताकों अरघ बनाई ।
निर्मल भाव बनाय रकेबी ता धर शीश नवाई ॥ वीसी० ॥६॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंध्यशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं नि० ॥

चौपाई—पांचो मेर असी जिन धाम । है बिन कीये ध्रुव तिस ठाम ॥
तिन मध बिंब देव जिनराय । सो मैं पूजों अर्घ चढ़ाय ॥१०॥

ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसंबंध्यशीतिजिनचैत्यालस्थजिनबिंबेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

अथ प्रत्येक मेरु पूजा

प्रथमही सुदर्शन मेरु की पूजा (अडिल्ल छंद)

मेर सुदरशन जान बड़े विस्तार जी । मानूं स्वर्ग थंभन कूं थंभा सार जी॥
जापैं षोडश धाम जिने सुर के सही। सो हम थापन थाप जजैं इस ही मही १॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक (चौपाई)

निरमल नीर गंग को लाय । झारी मणि मय माहि धराय ॥
मेर सुदरशान जिनके धाम । षोडश पूजों तीरथ ठाम ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ॥

बावन चंदन नीर घसाय । लायौ प्रभु पातरमें जाय ॥मेरु०॥२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि० ॥

अक्षत मुक्ताफल से लाय । उज्ज्वल खंड बिना सुख दाय ॥ मेरु० ॥३॥

ॐ ह्रीं मेरुसुदर्शनसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् नि० ॥

फूल कलप द्रुमके सुख रूप । लायो माला गूँथ अनूप ॥ मेरु० ॥४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥

नाना रस नैवेद बनाय । मोदक आदि भले सुखदाय ॥
मेरु सुदर्शन जिनके धाम । षोडश पूजों तीरथ ठाम ॥५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं नि०

दीपक रतनमई तम हार । लायौ धर पातर मैं सार ॥ मेरु० ॥६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं नि० ॥

सार धूप दश गंध बनाय । खेऊं जिन चरनन सुखदाय ॥ मेरु० ।७।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०॥

श्रीफल खारक आनि फल और । लायो भक्त हिये धरजोर ॥ मेरु० ।८।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०॥८॥

जल चंदन अक्षत पुह लेय । चरु दीपक फल धूप सु खेय ॥ मेरु ।९।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥

प्रत्येक अर्घ (पद्धरी छंद)

वनभद्रसाल जिन थान चार। विन कीनें शाश्वत पुन्यकार ॥
ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय। संबंध सुदर्शन मेरु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रशालसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नंदन वन चव जिन थान जान। सो तीर्थ पापहारी सु मान॥ तें पूजों ०।२।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुनंदनवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

चव जिन थल सोहे मनस थान। सब रतन खण्ड उपमा निधान। तें पूजो ० ३

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसौमनसवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

जिन थल चव पांडुक वन मझार। सुर खग पूजें तहां भक्ति धार। ते पूजो ४

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपांडुकवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

चव गज दंतो चव जिन सुगेह। महां सुंदर देखें होय नेह। तें पूजो॥५॥

ॐ ह्रीं सुर्शदनमेरोश्चतुर्गजदंतसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

जंबु वृक्षै जिन थान सोय । रचना माणि मय तहां बिंबजोय ।
ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय । संबंध सुदर्शन मेरु पाय ॥६॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुजंबवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ ६ ॥
जिन थान शालमलि वृक्ष ठांहि । मुख महिमा कहते पार नाहिं । तेपूजो॥७
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥
सुदरशनमेरु दक्षिण दिसाय । जिन थान कुलाचल पै जो पाय ॥
तिनमें जिन बिंब मनोज्ञ सोय । जिनके पद पूजों दीन होय ॥८॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिदक्षिणदिक्कुलाचलस्थजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥८॥
उत्तरदिश याही मेर जानि । जिन भवन कुलाचल पै सुथान । तिन०॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिउत्तरदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयाय अर्घ नि० ॥९॥
सुदरशनमेर पूरव दिशाय । जिन थान वक्ष्यारन सीस पाय । तिनमें० १०
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशासंबंध्यष्टवक्ष्यारगिरस्थजिनालयेभ्यो अर्घं नि० ॥१०॥
पच्छिम दिश येही मेरु सार । विक्ष्यारन पै जिन भवन धार । तिनमें० ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपच्छिमदिशासंबंध्यष्टवक्षारगिरस्थजिनालयेभ्यो अर्घं नि० ॥११॥

इस मेर सुदरशान पूर्व जाय। विजयारध पै जिनभवन पाय॥ तिन० १२

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपूर्वदिशायाःषोडशविजयार्धपर्वतस्थषोडशजिनालयेभ्यो अर्घं नि०

पच्छिम सुदरशान मेरु ठांहि। वैताडन पै जिन भवन पाहि॥ तिन० ॥१३॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशि विजयार्धपर्वतस्थजिनालयेभ्यो अर्घं नि०॥१३॥

इस मेर सुदरशान दछन जानि। रूपाचल पै इक जिन सुथानि॥तिनमें।१४।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरोः दक्षिणदिशि एकरूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति०।१४

उत्तर दिश इसही मेर जान। विजयारध पै जिन भवन मान। तिनमें०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरोरुत्तरदिशिरूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्वपामी० ॥१५॥

अडिल्ल छंद—

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी। दोय विरछ पट कुलाचला लख सारजी॥

षोडश वनके थान चार गजदंतहैं। ह्यां इक इक जिन भवन जजौं ते संत हैं१६
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंध्यष्टसप्ततिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति० ॥१६॥

अथ जयमाल (दोहा)

मेरु सुभग थानक भलौ, तीरथ पातक नास।
जजौं थान इस संगके, मन वच तन है दास ॥१॥

चाल चलतेगुरुकी—

मेरु सुदरशान सोहनौ तीरथ पद सुखदाय ॥ टेक ॥
ऊँचो जोजन लाख है, सब कनक स्वरूप
नीचै को मणि तेज है, बहु घेर अनूप ॥ मेरु सु० ॥२॥
भद्रसाल वन मेरुकी, जड़ भौम मझार
ता ऊपर फिर जाइये, वन नंदन सार ॥ मेरु सु० ॥३॥
ता ऊपर वन सोम है, तीजौ वन सोय।

ऊपर पांडुक वन कहौ, चौथो अवलोय ॥ मेरु सु० ॥४॥
इक वन वन, चव जानिये, श्री जिनवर ठाम ।
कनक रतन जड़िये सही, सब करौ प्रणाम ॥ मेरु सु०॥५॥
ठाम ठाम सर वावडी, सुभ महल अनूप ।
देव तहां क्रीडा करैं, वापक गुन रूप ॥ मेरु सु० ॥६॥
के चारन मुनि जाय हैं, जिन वंदन काज ।
ध्यान धरें शुभ थानमें, पावैं शिवराज ॥ मेरु सु० ॥७॥
पांडुक वनमें जानिये, मध चूलक ठाम ।
वैडूरक मणिमय सही रंग हरत सुधाम । मेरु सु० ॥८॥
जोजन तुंग चालीस है, तिस ऊपर जोय।
केस अंतरै स्वर्ग है, सौ धर्म जुग सोय ॥ मेरु सु०॥९॥
इत्यादिक महिमा घनी, कवलों वरनाय ।

सहस जीवतै कीजिये; तौ हु पार न पाय ।
मेरु सुदर्शन सोहनो तीरथ पद सुखदाय ॥१०॥
सव गिर में परधान है, यह मेर महान ।
याके अन परवार हैं, तहां जिनके थान ॥ मेरु सु०॥११॥
तीस चार वैताढ हैं, षोडश वह्यार ।
और कुलाचल षट सही, गजदंत वृक्ष सार॥ मेरु सु०॥१२॥
एक एक जिन थान है, मैं पूजों सार ।
मेरु सुदरशान है सही, कंचन वरन अपार ॥ मेरु सु०॥१३॥
दोहा—मेरु माहि मन राखिये, तहां अकीर्तम थान ।
जिनके मुनि चारण तहां तातै नामि पुनि आनि ॥१४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति सुदर्शन मेरु पूजा संपूर्ण)

अथ द्वितीय विजयमेरु पूजा ।(गीता छंद)

खंड धातकी पूर्व दिशाकौ विजय मेरु सुथान है ।
तिस ऊपरे जिन धाम षोडश अकीर्तम पुन धाम हैं ॥
इन आदि और कुलाचलादिक मेरु संबंधी सही ।
जिन थान कूं यहां थापि पूजूं भक्त तै पुनकी मही ॥१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् [इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयानि अत्र ममसन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं

अथाष्टक (अडिल्ल छंद)

नीर निरमलो गंग धारको लाइये । सुन्दर झारी घालि हरप बहु पाइये ।
जनम मरन दुख हरन महा श्रुति गायजी । पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति

चंदन बावन अगर गंधले सारजी। निरमल नीर घसाय आप कर धार जी॥
भौ तपरोग मिटावनकौ गुन गायजी।पूज्यजिनालयविजयमेर जुतपायजी
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०

॥४॥

अक्षत उज्ज्वल खंड विनाही लाइयौ। प्राशुक जलतें धोय सुद्ध करवाइयौ॥
थान अखयका लोभ धारमैंआयजी। पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति०

फूल कनक चांदीके प्राशुक लेयजी। तिनको हार बनाय शोभजुत जेयजी॥
कामदहनके काज भक्त धर आयजी। पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति०

नाना रस नैवेद आदि मोदकसही। कीनैं शुभ आचार सहित अब इस मही॥
भूखरोग खय काज आज हम आयजी। पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति

॥६॥

मणिमय दीपक लेय जोत परकाश जी। कंचन पातर धार होय प्रभु दासजी
मेटन मिथ्या ध्वांत पूजन आयजी। पूज्य जिनालय विजय मेर जुत पायजी ६
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामो०

धूप मनोज्ञ बनाय गंध दश डारजी। खेवन आयौ अगिन माहि थुति धारजी
कर्म दाह फल चाह और नहीं आयजी। पूज्य जिनालय विजय मेरु जुतपायजी
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी सारजी। खारिक आदि अनेक और फल धारजी।
कारण शिव फललोभ आप पै आयजी। पूज्य जिनालय विजयमेरु जुतपायजी
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

नीर गंध तंदुल पुह चरु ले दीपजी। धूप फला विध आठ अरघ सुभ टीपजी
नाना सुखके काज पाप खयदायजी। पूज्य जिनालय विजयमेर जुतपायजी
ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

प्रत्येक अर्घ [जिनजंपि की चाल]

विजय मेर की भौम मे बन भद्रसाल सुखदाई जी ।
च्यार जिनालय मणिमई ते पूजों अर्घ बनाई जी ॥
मन वच भक्त लगाय कैं ॥१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंवंधिभद्रसालवनस्थचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नंदन वन या ऊपरै तिस महिमा अधिक विचारो जी ।
विजय मेर शुभ स्थान है यह तीरथ निरमल जानोजी । मन० ।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः नंदनवनसंवंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

इस ऊपर वन सोम है तहां देव विद्याधर जावें जी ।
चारि जिनालय हैं तहां ते पूजों मैं अघ ढावैंजी ॥
विजय मेर तीरथ सही तहां जिन थल मुनि शिव पावैंजी । मन० ।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः सौमनसवनसंवंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पांडुक वन सब ऊपरे जहां रतन मई जिन गेहाजी ।
चारि जिनालय जिन कहे ते पूजों अरघ समेहाजी ॥
विजय मेर तीरथ सही तहां जिन थल मुनि शिव पावैंजी। मन० । ४

ॐ ह्रीं विजयमेरोःपाँडुकवनसंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

विजय मेर दक्षिण दिशा जंबू वृक्ष वहु विस्तारो जी ।
तापैं इक जिन गेह है सो पूजों अरघ संवारौं जी ॥
विजय मेर तीरथ सही पूजैं सुर खग नित सारो जी ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिशस्थजंबूवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा इस मेर की सालमली वृक्ष जानौ जी ।
तापै जिन मंदिर सही ते पूजों अरघ चढ़ानौं जी ॥
विजय मेर तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी ॥६॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोरुत्तरदिशायाः शाल्मलिवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्व० ॥ ६ ॥

विजय मेर गजदंत पै जिन थानक है पुन्य दाई जी ।
सो चारों थल बंदिये ले अरघ महा हरपाई जी ॥
विजय मेर तीरथ सही पूजें सुर खग यह थानों जी ॥७॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोश्चतुर्गजदन्तोपरिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपा० ॥७॥

विजय मेर दक्षिण दिसा गिरि तीन कुलाचल सारोजी ।
तिन पै जिन थानक सही ते पूजों हरप अपारोजी ॥
विजय मेरु तीरथ सही पूजें सुर खग यह थानोंजी ॥८॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोः दक्षिणदिशायाः त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति

उत्तर दिस इस मेरकी गिर कहे कुलाचल तीनों जी ।
तिन पै जिन मंदिर सही ते पूजों भक्ति नवीनों जी ॥
विजय मेर तीरथसही पूजें सुर खग यह थानों जी ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंध्युत्तरदिशायास्त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व०

दक्षिण दिस वेताढ है गिर विजय मेर तें जानों जी ।
तिन पै जिन थल विन किये ते पूजौं हरष बढ़ानो जी ।
विजय मेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी ॥१०॥
ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिश्येकविजयार्धोपर्येजिनलयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा
विजय महा गिर मेर की विजयारध पश्चम सोला जी ।
तिन पै इक इक जिन भवन ते पूजैं अघ होय खोला जी ॥
विजय मेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी ॥११॥
ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०
विजय मेरु की उत्तरैं विजयारध एक सुथानौं जी ।
तापै इक जिन थान है सो पूजौं कर सन्मानौं जी ॥
विजय मेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानों जी ॥१२॥
ॐ ह्रीं विजयमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनचैत्यालयायाऽर्घं निर्वपामीति०

पूरब दिस इस मेर की विजयारध महा गिरिंदा जी ।
तिन पै पोडश जिन भवन पूजें मिट है अघ फंदा जी ॥
विजल मेरु तीरथ सही पूजें सुर खग यह थानों जी ॥१३॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व०

पूरब दिस इस मेर की बसु परवत सार विक्षयारो जी ।
तिन पै जिन थल आठ हैं ते पूजों मन वच धारो जी ॥
विजय मेरु तीरथ सही पूजें सुर खग यह थानों जी ॥१४॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिश्यष्टविक्षयारेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ॥१५॥

पच्छिम विजय सुमेर की आंठ विच्चयार सुजानों जी ।
आठ तिनौं पै जिन भवन ते पूजों अरघ सुआनौं जी ॥
विजय मेरु तीरथ सही पूजें सुर खग यह थानौं जी ॥१५॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिश्यष्टवक्षयारगिरिष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपा०

अडिल्ल छंद

विजय मेरु संग इस प्रकार वन चार जी।गजदंता वृक्षदोय कुलाचल सारजी।
विजयारध चौंतीस वक्षार सुजानिये।इनपै जे जिन थान जजौं अर्घआनिये।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥

अथ जयमाल

दोहा—विजय मेरु दूजो सही, जान अकिरतम थान।
या संबंध जे जिन भवन, पूजैं सुर खग आन ॥१॥

मुणयणाणंद की चाल—

मेरु विजया विषैं थान जिनके सही।बिंब तिनमें जिसे देव जिन छबिकही ॥
दिष्ट नाशा दिये ध्यान पदमासना।देखते नाश होय पापकी वासना ॥२॥
शांति मुद्रा बिना राग सुखदायजी।मानु अब दिव्य धुनि खिरैगी आयजी

इन्द्र से दीन होय करैं अरदासना। देखते नाश होय पापकी वासना॥३॥
ध्यानमें मुनी जिन विंब जे ध्याय हैं। आपनो रूप ऐसो कियो चाय हैं॥
जोय जिन ध्यान नहीं होय जगआसना। देखते नाश होय पापकीवासना।
भक्त मन मोहनी देह जिनराय की। देखते वढ़ै उर राग सुखदायजी॥
मोक्ष तिय नित चहै रूप तिन भासना। देखतेनाश होय पापकी वासना॥
देखते मूर्ति जिन राय सुध आय है। सोम अति सोहनी काय जिनराय है॥
लखै शुभ ध्यान दुर ध्यान की वासना। देखते नाश होय पापकी वासना।६।
आदि इनको घनी ऊपमा दायजी। अकिरतम देव जिन विंब में पायजी॥
तीर्थ मंगल करा और समता सना। देखते नाश होय पापकी वासना॥
विंब सव रतन मय तजे वहु धारजी। जोति तिनकी कनै दवै शशिसारजी॥
कनक मय गेह जिन धरें परकासना। देखते नाश होय पापकी वासना८

बड़े बिस्तार जिन थानको जानियै।कोटि त्रय वेष्टि रचना घनी मानियै ।
बाग बन महल वापी सुदुख नाशना।देखते नाश होय पापकी वासना।।९।।
दूसरे मेरु विजय तनी विधि कही।वरनते सोभ पुन्य रास भव्यनि लही ।
तीर्थ सिद्ध क्षेत्र मुनि करै कर्म नाशना।देखते नाश होय पापकी वासना।।१०।
विजय यह मेर बहु घेरमें जानिये।देव खग गमन तहँ सदा तिस थानिये ॥
जजैं ते जाय हम करैं यहँ उपासना।देखते नाश होय पापकी वासना।।११।।

दोहा—विजय मेरु गुनमाल को, जपै जाय भव कोय ।
ताको तीरथ लाभ है, दिये भाव फल होय ।।१२।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १२ ॥

(इति विजय मेरु पूजा समाप्त)

अथ तृतीय अचलमेरु पूजा (वेसरी छन्द)

मेर अचल सनबंधि जिनाला। सो पूजैं सुर खग गुनमाला।
हम तौ सकत हीन हैं भाई। तातैं यहां थपि भावन भाई ॥१॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयान्यत्रावतरतावतरत संवौषट् (इत्याह्वाननं)
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयान्यत्रममसन्निहितानिभवतभवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक। (अडिल्ल छंद)

नीर निरमलो कनक पात्र धर लायजी। उज्जल सार सुगंध मनोहर आयजी ॥
अचल मेर सनबंध जिते जिन थानजी। पूजौं भक्त बढ़ाय फलै भव हानिजी ।१॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधि जिनचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा १

चंदन चारु सुगंध अगर मिलवायजी। प्राशुक पानी लाय घस्यो थुति गायजी॥
अचल मेरुसनबंध जिते जिन थानजी। पूजौं ताफल भव आताप मिटावजी २

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।२॥

अक्षत अखँड अनूप गंध धारी सही॥धवल रंग मुकता फलसे पुन की मही।
अचल मेर सनबंध जिते जिन थान जी॥पूजों ता फल अक्षय पदकों पायजी
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

फूल कलप वृक्ष सार गंध दायक सही॥कंचन चांदी फूल आपनै कर मही॥
अचलमेर सनबंध जिते जिन थानजी॥सो पूजों पद मदन तनौं खय जानिजी
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति ४

नाना रस सुभ लाय कियौ नैवेदजी। मोदक आदि बनाय लिए निरवेदजी॥
अचल मेर सनबंध जिते जिन थानजी॥सो पूजों फल भूख तनी होय हानिजी।
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक मणिमयसार जोति तम नासना॥कनक पात्र धर लाय करौ थुतिभासन।
अचलमेर सनबंध जिते जिन थानजी॥सो पूजौं फल होय मिथ्या तम नासजी
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति०

अगर चंदन आदि जो दशाधा धूपजी।अगनि मध्य खेऊँ निज हौन अरूपजी।
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थानजी। सो पूजा फल कर्म दहै शिव जायजी
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥
श्री फल लौंग बदाम सुपारी सारजी।आदि इने आनि आनि फला सुखकारकी
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थानजी।सो पूजौं फल मोक्ष हौनकौं जानिजी८
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८
जल चदंन क्षत पुष्प चरूदीपक सही।धूप और फल आठ लेय अरघे टही।।
अचलमेर सनबंध जिते जिन थानजी।सो पूजौंफल अमल हौन हित आनिजी।
ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा । ९॥

अथ प्रत्येक अर्घ (चौपाई)

अचल मेरु की भौम मझार। भद्रसाल जानौं बनसार।

ताके मध चव जिनवर थान। ते हौं पूजौं शक्त प्रमान ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः भद्रसालवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्व० ॥१॥

नंदन नाम महा बन सोय। अचल मेरु के ऊपर जोय॥
ताके माहिं चार जिनथान। तेऊ पूजों शक्त प्रमान ॥२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः नंदनवनसंबंधिचतुर्ज्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा । २॥

अचल मेरु के ऊपर सोय। सोमनस नाम वन अदभुत जोय ॥
तामें चार जिनालय जान। ते हों पूजों सक्त प्रमान ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः सौमनसवनसंबंधिचतुर्ज्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

पांडुक वन सब ऊपर जोय। अचल मेर सनबंधी सोय।
ता बिच चार जिनालय जानि। ते हू पूजों सक्ति प्रमान ॥४॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पाँडुकबनसंबंधिचतुर्ज्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामाति स्वाहा ॥४॥

अचल मेर की दाक्खिन दिशा। जंबू वृक्ष ऊपरे लसा।

एक जिनेसुर जी का थान । सो ही पूजों सक्त प्रमान ॥५॥
ॐ ह्रीं अचलमेरोःदक्षिणदिशस्थजंबूवृक्षस्यैकजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ॥५॥

अचल मेरु की उत्तर सोय । सालमली वृक्ष मण मय जोय ।
तापै एक जिनेसुर थान । सोहू पूजों सक्त प्रमान ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिशायाःशाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ६

अचल मेरु के चार बखान । गजदंता परवत हित दान ॥
तिन पै चार जिनालय जान । ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥७॥
ॐ ह्रीं अचलमेरोश्चतुर्गजदंतोपरिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

अचल मेरु की दक्षिन सोय । तीन कुलाचल गिर सुभ जोय ।
तिन पै तीन जिनालय जान । ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥८॥
ॐ ह्रीं अचलमेरोःदक्षिणदिशि त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ८

अचल मेरु उत्तर दिगजाय । तीन कुलाचल परवत पाय ।

तिन पै तीन जिनालय जान। ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥९॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिशि त्रिषुकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अचल मेरु की पूरब जाय। आठ वक्षार महा गिर पाय।

तिन इक इक पै हैं जिन थान। ते हौं पूजों सक्त प्रमान ॥१०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पूर्वदिश्यष्टवक्षारगिरिष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ॥१०॥

पच्छम अचल मेर को जोय। आठ वक्षार बड़े गिर सोय॥

तिन पै आठों ही जिन थान। ते हू पूजों सक्त प्रमान ॥११॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पश्चिमदिश्यष्टवक्षारेष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ॥११॥

अचल मेरु की पूरब जोय। हैं विजयारध षोडश सोय॥

तिन पै षोडश ही जिनथान। सो हौं पूजों सक्त प्रमान ॥१२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति ।१२।

अचल मेरु की दक्षिण भोम। विजयारध गिर है इक सोम॥

ता ऊपर इक जिन को थान । सो हू पूजों सत्क प्रमान ॥१३॥
ॐ ह्रीं अचलमेरोः दक्षिणदिश्येकविजयार्धोपर्यैकजिनालयायार्घं निर्वपामीति० ॥१३॥
मेर अचल की पश्चिम जेइ । षोडश विजयारध गिर लेइ ॥
तिन सब पै इक इक जिनथान । सो हौं पूजौं सत्क प्रमान ॥१४॥
ॐ ह्रीं अचलमेरोः पश्चिमदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०।१४।
अचल मेरु की उत्तर धरा । एक खगाचल पर्वत परा ।
तापै एक जिनालय जान । सो हौं पूजौं सत्क प्रमान ॥१५॥
ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धस्यैकजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥
खंड धातकी दक्षिण जाय । इष्वाकार एक गिर पाय ।
ता पै एक जिनालय मान । सो हौं पूजौं सत्क प्रमान ॥१६॥
ॐ ह्रीं धातकीखंडदक्षिणदिशियक्ष्वाकारपर्वतोपर्यैकजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।१६॥
उत्तर दिशा खँड धातकि माहि । इष्काकार मध्य में पाहि ।

ता पै एक जिनालय मान। सो मैं पूजों सक्त प्रमान ॥१७॥

ॐ ह्रीं धातकीखंडस्योत्तरदिशियद्ध्वाकारपर्वतोपर्येकजिनालयायार्घं निर्वपामीति० ॥१७॥

ऐसे अचल मेर विध जोय। सो सो धरा जिनालय सोय।

ते हौं अरघ लाय हरषाय। पूजौं सब जिन थल थुति गाय ॥१८॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥

अथ जयमाल

दोहा—अचल मेरु पै जिन न्हवन होय मुनी शिव जाय।

तातैं तीरथ निरमलौ मैं पूजौं गुन गाय ॥ १ ॥

वेसरी छंद—अचल मेरु सनबंधी जानौं। हैं जिन थान सु कहौ बखानौं।

अरु पर्वत गिर याकी लारा। सुनतें जीव लहैं पुन सारा ॥२॥

जहां जहां जिन मंदिर होई। सो सो थान कहौं मुनि सोई ॥

चव्वन षोडश जिन थल धारा। सुन तें जीव लहैं पुन सारा ॥३॥
चार कहे गजदंता भाई। इन पै चव जिन गेह बताई।
सो भी रतन मई शुभकारा। सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥४॥
जंबू सालमली वृच्छ जानौं। इन जुग पै जुग जिन थल मानौं।
तहँ भी सुर खग का पैसारा। सुन तैं जीव लहै पुन सारा ॥५॥
षोडश गिर वच्यार हैं भाई। तिन पै षोडश जिन ग्रह पाई।
तहां जाय पूजों शुभ धारा। सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥६॥
विजयारध चौंतीसा जानौ। ते सब चांदी मय तन थानौ।
तिन पै चौंतिस जिन थल भारा। सुन तें जीव लहैं पुन सारा ॥७॥
इक्ष्वाकार दोय गिर जानौ। इन पै दोय जिनालय मानौ।
तहां सुर खग पूजें हितकारा। सुनतें जीव लहैं पुन सारा ॥८॥

इत्यादिक जिन मंदिर भाई। सबै थान जिय को सुखदाई।
ये सब तीरथ थान अपारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा ॥९॥
जो पूजै परतछ तहँ जाई। ताके उदय पुन्य होय भाई॥
हम परोक्ष गुन गावें प्यारा। सुन तें जीव लहै पुन सारा ॥१०॥
हम यहां पूज्य भावना भावैं। ताही कर भव सफल करावैं ॥
गावैं राग धार गुन भारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा ॥११॥

दोहा—खंड धातकी पछम दिस, अचल मेर सुभ धाम।
ता संबंध तीरथ सबै, जजौं जिनेश्वर ठाम ॥१२॥

ॐ ह्रीं धातकीपश्चिमदिश्यचलमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति अचलमेरु पूजा समाप्त।

अथ चतुर्थ मंदिरमेरु संबंधी जिनालय पूजा

मुणयणाणंद की चाल

अर्घ यंह कर धरा पूर्व दिसा जानिये। मेंर चौथा भला मंदर सुख मानिये।
तासंबंधी जिते जिन थानका हैं सही। सो सकल थापिइहां जजौं पुन्यकी मही॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् (इत्याह्वानम्)

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक (भुजंगप्रयात छंद)

लयानीर प्राशुक भले पात्र माहीं। धरी भक्त उरमें लिये हाथ ठाहीं।
करूं वीनती गुनन की गाय माला। जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

भला अगर चंदन घसा नीर माहीं। धरे गंध बहु भंवर गुजार लाहीं।
लया पात्र माहीं कही भक्त माला।जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥२॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिन चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपा०
भले खंडबिन तंदुला सोध लाया। घने उज्जला सोभदाई सुहाया।
धरें पात्र माहीं पढ़ी भक्त माला। जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला ॥३॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपा०
लए फूल शुभ वृक्ष के गंध दाई। करी माल नीकी भली जुक्त लाई॥
धरी आपने हाथ कह भक्त माला।जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥४॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति०
नैवेद नाना भरे स्वाद लाया। घने भेलि रस मोदकादिक बनाया।
धरे पात्र करले पढ़ी भक्त माला। जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥ ५॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति०

लए दीप मणमय महा जोति धारी। गया अंध तिनतें जगे छोडि सारी।
लए आरती गाय मुख भक्त माला। जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥६॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति०
करी धूप दशधा लगी गंध आनी। घसी नीरतें जोर बारीक ठानी।
धरी अगनि पैं हरष कह भक्त माला। जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥७॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०
लए श्रीफला लौंग बादाम भारी। भले खारका और जानौं सुपारी।
चले पात्रमें धार पढ़ भक्त माला। जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥८॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥
धरैं नीर चंदन अक्षत पहुप भारी। नईवेद दीपक भला धूप थारी।
धरी अर्घ करले भली भक्त माला। जजौं मेरु मंदिर संबंधी जिनाला॥९॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

अथ प्रत्येक अर्घ (मुणयणाणंदकी चाल)

मेरु मंदिर तनी भौममें जानिये । महा बन भद्रसाला सुखद मानिये ॥
तास मध्यचार जिन थान पुन्यकी मही। सो जजौं अर्घतें वीनती मुख कही॥१॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरुभद्रसालवनसंबंधिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

ऊपरें मेरु मंदिर तनों जानिये । नंदन बन सोभिए महा सुख मानिये ॥
ता विषैं चार जिनराज मंदिर सही। सो जजौं अर्घसों वीनती मुख कही ॥२॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः नंदनवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ २ ॥

मेरु मंदिर तने ऊपरें सारजी । सौमवन है सही सकल सुखकारजी ॥
ता विषैं चार जिन देव मंदिर सही। सोजजौं अर्घसों वीनती मुख कही ॥३॥
ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः सौमनसवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

ऊपरें मेर मंदिर तने जानिये । पांडुवन सोहनो तीर्थसो मानिये ॥
चार जिन थान विन किए तहां हैं सही।सोजजौं अर्घतें वीनती मुखकही॥४॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पांडुकवनसंबंधिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

मेरु मंदिर दाक्षिण दिसा जोय जी। वृक्ष जंबू कहौं रतन मय सोयंजी॥
तास ऊपर कहौ थान जिनको सही। सो जजौं अर्घ ते वीनती मुख कही॥५॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः दक्षिणदिशि जंबूवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं निर्वपा०

मेरु मंदिर तनी दिसा उत्तर गिनो। सालमल वृक्ष सो मण मई धुनि भनौं॥
एक जिन गेह तिन कियो तहां है सही। सोजजौं अर्घते वीनती मुख कही॥६

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोरुत्तरदिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं निर्वपा०

मेरु मंदिर तनें चार गज दंतजी। तिन विषें चार जिन थान अघ तंतजी॥
देव खगजाय जिन सेव करैहं सही। सोजजौं अर्घतें वीनती मुख कही॥७

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोश्चतुर्गजदन्तेषु चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ॥

मेरु मंदिर तनें दाक्षिन दिशा भौमजी। तीन गिर कुलाचल जान अति सोमजी॥
तिन विषैं तीन जिन थान शुभकी मही। सोजजौं अर्घते वीनती मुखकही ।८

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः दक्षिणदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यः जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

उत्तर दिशमेरु मंदिर तनी जानिये। तीन परवत भले कुलाचल मानिये।।
तिन विषैं तीनही थान जिनके सही। सोजजौं अर्घतें वीनती मुख कही।।६।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोरुत्तरदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यः जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व०

मेरु पूरब दिसा मंदिर की जानिये। आठ वक्षार गिर बड़े शुभ मानिये।।
तिन विषैं आठही जिन भवनहैं सही। सोजजौं अर्घते वीनती मुखकही।१०।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पूर्वदिशासंबंध्यष्टवक्षारगिरिष्वष्टाभ्यः जिनालयेभ्योऽर्घं निर्व०

पच्छिम दिस मेरु मंदिर तनी जोइये।आठ वक्षार गिर कनक मय सोइये।।
तिन विषैं आठ जिन थान शुभकी मही।सोजजौं अर्घतें वीनतीमुखकही ११

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पश्चिमदिश्यष्टासु वक्षारगिरिष्वष्टाभ्यः जिनालयेभ्योऽर्घं नि० ११

पूरब दिश मेरु मंदिर तनी सारजी।जान विजयारधा षोडशा भारजी।।
ऊपरै जिन भवन सबन के हैं सही।सो जजौं अर्घतें वीनती मुखकही।।

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पूर्वदिशासंबंधिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व०

दच्छन दिश मेरु मंदिर तनी जायजी॥एक रूपाचला खगन को थायजी॥
ता विषैं एक जिनराज मंदिर सही॥ सो जजौं अर्घ तें वीनती मुखकही॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः दक्षिणदिशासंबंध्येकविजयार्धगिरावेकजिनालयायार्घं नि० १२

मेरु मंदिर तनी पाछिम दिशा भाय है।षोडशा खगाचल रूप मय पायहै॥
तिन धरैं देव जिन भवन षोडश सही॥सो जजौं अर्घ तें वीनती मुखकही॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोः पश्चिमदिशासंबंधिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं निर्व०

मंदिर शुभ मेरुकी॥ उत्तर दिशा जायजी॥ खगाचल एक गिर रूपमय थायजी
ता विषैं एक जिनराज थल है सही॥सोजजौं अर्घतें वीनती मुख कही॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरोरुत्तरदिशासंबंध्येकविजयार्धोपर्येकजिनालयायार्घं निर्व० ॥१५॥

आदि इन मेर मंदिर तनी लारजी॥थान बहु सुभग सब आकिरतम सारजी
तिन विषैं आकिरतम ठाम जिनजेसही॥ सोजजौं अर्घतें वीनती मुखकही

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।१६।

❋ अथ जयमाल ❋

दोहा—मंदिर मेरु सु सोहनो चवथो अचल अनादि ।
ता संबंधि जिन थानको नमौं करों अघ वादि ॥१॥

परमादी की चाल—

पोहकर अर्ध मझार पूरब मेरु कहाजी ।
मंदिर ताका नाम जिन धुनि माहि चयाजी ॥२॥
जाके शीश मझार पांडुक है बन नीका ।
रचना धरैं अपार सुखदायक सबजीका ॥ ३ ॥
ता बन चार अनूप पांडुक शिला कहीजी ।
अर्धचन्द्र आकार बहु विस्तार लही जी ॥४॥

मोटी जोजन आठ लंबी सौ लक्ष भाई।
चौड़ी है जो पचास जोजन अति सुखदाई ॥५॥
ता ऊपर सिंघपीठ तीन कहे आति भारी।
ता मघ कलश हजार आठ रहे शुभकारी ॥६॥
मंगल द्रव वसु जान धूप घटादिक सारे।
रचना और अनेक जानि अनादि अपारे ॥७॥
ऐसी सिला अनूप ता ऊपर जिन आवें।
बैठि सिंहासन ठाम प्रभु असनान करावें ॥ ८ ॥
इस खंड जे जिन होंय तिनकों इन्द्र सुलावैं।
ह्यां धर सुर सब आय क्षीरोदधि जल भावें ॥ ६ ॥
कलश सहस वसु आनि सागर से विस्तारा।

वसु जोजन त्वंग जानि एते मध्य विचारा ॥ १० ॥
इक जोजन मुख सार ऐसे कलश सुलावैं ।
हाथों हाथ सुदेव हरिके हाथ धरावैं ॥ ११ ॥
इन्द्र तबै कर लेय जय जय शब्द करावैं ।
जिन शिर एके साथ धारा कलश ढरावैं ॥१२॥
कर हरि नृत्य थुति गान जिनकों घर पहुचावैं ।
तातैं ए गिरराज जगमें तीरथ गावैं ॥१३॥
तहँ मुनि चारण जाय ध्यान धरैं सुध लाई ।
कर्म काटि शिव लेंय तातैं तीरथ थाई ॥१४॥
इम वहु उपमा धार मंदिर जानों मेरा ।
कनक मई सब पीठ त्वंग बड़ा वहु फेरा ॥ १५ ॥

दोहा—चौथा मंदिर मेरु जो सुर खग को आधार।
हम य्हां तैं पूजन तनी भावन भावैं सार ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं मंदिरमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति मंदिरमेरु पूजा समाप्त)

❋ अथ पंचम विद्युन्माली मेरु पूजा ❋

गीताछंद—विद्युन्माली मेरु पञ्चम पच्छिम पुष्कर दीप जी।
गजदंत वृक्ष कुलाचला वैताढि पैं शुभ दीपजी ॥
इन आदि सकल वख्यार थानक ऊपरैं जिन थानजी।
ते जजों थापन थापि मैं य्हां भावना शुभ आनजी ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधीनि जिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधीनि जिनालयानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधीनि जिनालयानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत अभिधिक०

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक । (त्रिभंगी छन्द)

जल प्राशुक लाया अति हरपाया निरमल पाया सुखकारी ।
धर कंचन झारी भक्त उचारी नय शिव धारी गुन भारी ॥
यह विद्युनमाली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही ।
इनके सनमंधी जिन थल संधी मैं सब वंदों पुन्य मही ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्वपामी० ॥१॥

हम चंदन आनी गंध जु थानी घासि शुचि पानी त्यार किया ।
धर रतनन झारी निज कर धारी भक्त उचारी हर्ष लिया ॥ यहवि॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चदन निर्वपामीति ॥२॥

शुभ अक्षत जानौं खंड न मानौं धवल अघानौ वास धरा ।

तिनकों शुभ धोये पुंज संजोये भाव मिलोये पुन्य करा। यह०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्व० ॥३॥

अब फूल सुलाये गंध धराये सब मन भाये शोभ दई।
कल्पवृक्षनि के हैं हाथ लये हैं गूंथ दए हैं माल ठई ॥
यह विद्युनमाली मेर विशाली सब अघ टाली थान सही।
इनके सनमंधी जिन थल संधी मैं सब बन्दों पुन्य मही ॥५॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥४॥

नैवेद्य सुप्यारा बहु रस धारा स्वाद अपारा तुरत किये।
धर कंचन थाली भक्त विशाली कह गुन-माली हरष हिये ।यह०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति ॥५॥

मणि दीपक आन्या सब तम भान्या ज्ञान उगान्या हम लाये।
धर पातर माही उर हरषाही भक्त बड़ाई गुन-गाये।।यह वि०॥६॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामी०

हम धूप बनाए शुभ गंध लाए दश विध भाए मेलि लई ।
अब भक्त बड़ाई मुख थुति गाई अगनि धराई खेय दई यहवि०॥७॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मेन्धनदहनाय धूपं निर्वपामीति०

फल लौंग सुपारी श्री फल भारी खारिक सारी हम लाए ।
फिर जान बदामा और सुकामा लेकर ठामा शुभ दाए॥यहवि०॥८॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति० ॥८॥

जल चंदन आन्या अक्षत मिलाना पहुप सुजाना गंध धरा ।
चरु दीप सु धूपा फलजु अनूपा अर्घ सरुपा हाथ करा॥ यह०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपा० ॥९॥

अथ प्रत्येक अर्घ । (चौपाई)

पहुकर अर्ध पछम दिस मेर । विद्युनमाली नाम अति घेर ।

ताके भद्रसाल जिन थान । सो हौं जजौं अरघ थुति आन ॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि० ॥ १ ॥

याही विद्युन्माली मेर । ता ऊपरि नंदन वन हेर ।

ता वन में चव जिनके थान । सो हौं जजौं अरघ थुति आन २

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिनंदनवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति ॥२॥

इस ही मेरु सोमवन सोय । ताकी महिमा अद्भुत होय ।

ता वन विषैं चार जिन थान । सोहौं जजौं अरघ थुति आन ॥३॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः सौमनसवनसंबंधिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि० ॥ ३ ॥

मेरु सुविद्युन्माली देख । तिस पै पांडुक वन है येक ।

ताके मध चव जिनके थान । सो हौं जजौं अर्घ थुति आन ॥४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिपांडुकवनस्य चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा४॥

विद्युन्माली मेर सुभाय । ताके चव गजदंते पाय ।

तिन इक इक पैहै जिनथान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥५॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिचतुर्गजदंतेषु चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

याही मेर दक्षिण दिस जोय। जंबू नाम वृक्ष इक होय।
ताके मध्य एक जिन थान। सो हौं जजों अरघ थुति आन॥६॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिदक्षिणदिशि जंबूवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं नि० ॥६॥

इस ही मेर उत्तर दिस जोय। सालमली वृच्छ जानो सोय।
ता ऊपर जिनको इक थान। सोहौं जजों अरघ थुति आन॥७॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंध्युत्तर दिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनालयायार्घं नि० ॥७॥

याही मेर दक्षिण दिस जाय। तीन कुलाचल गिर सुभपाय।
तिन पै तीन थान जिनराय। सो हौं जजों अरघ थुति गाय॥८॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिदक्षिणदिशायां त्रिषु कुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं नि०८

उत्तर दिस इस मेरु सुजेय। तीन कुलाचल परवत तेय।

तिन पै तीन देव जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन ॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि विद्युन्मालिमेरोः त्रिषु कुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

याही मेर पूरब दिश सोय। आठ वछार नाम गिर होय।

तिन सबपै इक इक जिन थान। सो हों जजौं अरघ थुतिआन ॥१०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशायामष्टवक्षारपर्वतेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि० १०

याही मेर की पच्छिम सोय। आठ वछार नाम गिर होय।

तिन पै आठ जिनेश्वर थान। सोंहों जजौं अरघ थुति आन ॥११॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिपश्चिमदिशायामष्टवक्षारेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं ॥११॥

पूरब इस ही मेर बताय। षोडश रुपाचल मन लाय।

तिन इक इक पै है जिनथान। सोहों जजों अरघ थुतिआन ॥१२॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं ॥१२॥

इस ही मेर दच्छिन दिस जोय। विजयारध इक पर्वत सोय।

ता ऊपर है इक जिन थान । सोहों जजौं अघ थुति आन।१३।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः दक्षिणदिश्येकविजयार्धपर्वतोपर्येकजिनालयायार्घं नि० ।१३।

याही मेर पच्छिम दिस धरा । षोडश गिर वेताढ सु परा ।

तिन सब पै जिनजी के थान। सो हौं जजों अर्घ थुति आन॥१४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं नि०

उत्तर इस ही मेर सुजाय । एक रूप गिर परवत पाय ।

जाके शीश एक जिन थान । सो हौं जजौं अर्घ थुति आन॥१५॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धपर्वतोपर्येकजिनालयायार्घं निर्व ॥ १५ ॥

अर्ध दीप पहुकर के माहिं । दच्छिन इक्ष्वाकार कहाहिं ।

ता ऊपर इक जिनवर थान । सो हों जजौं अरघ थुति आन।१६।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पुष्करार्द्धदक्षिणदिश्येकेक्ष्वाकारोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं ।१६।

याही दीप उत्तर दिशा जाय । इक्ष्वाकार महा गिर पाय ।

तापै इक हैं जिनको थान । सोहों जजों अर्घ थुति आन ।१७।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपोत्तरदिश्येकेक्ष्वाकारपर्वतसंबंधिजिनचैत्यालयायार्घं नि० ॥१७॥

विद्युनमाली मेर सुलार । एते थान जान सुखकार ।

जो तीरथ हैं जिनके थान । सो हों जजों अर्घ थुति आन।१८॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मलिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १८ ॥

❋ अथ जयमाला ❋

दोहा—पच्छिम पहुकर द्वीप में विद्युन्माली मेर ।

कनक मई अति सोहनौ तीरथ निरमल घेर ॥१॥

वेसरी छंद—विद्युनमाली मेर सुथाना । तहां जिन गेह पाप मलहाना ।

तिनकी उपमा को मुखगावै । सहस जीभ तें पार न पावै ॥२॥

रतन विंब कंचन जिन गेहा । देखत जन मन उपजे नेहा ।

उदै पुन्य ताके तहां जावै । तुछ पुन धारी दरश न पावै ॥३॥
जाय देव खग इंद्र धनिंदा । तिननें पूरब भव जिन वंदा ।
हमसे हीनसक्त नहीं जावैं । तातैं हम यहा भावन भावैं ॥४॥
शची सहित हरि देव मिलाई । जाय मेर पूजे जिन पाई ।
गावैं गान भक्त मुख सेती । नटै नाच नाना गति जेती ॥५॥
शची नचै हरताल बजावै । कभू नचैं हर शची नचावै ।
हाव भाव सब लीला ठानै । चंचल पग कर तन द्रिग तानै ॥६॥
नचै अकाश भुजक भू जाई। कभूं दीखे कभूं अदृश थाई ।
दीरघ तन कबहूं लघु होई । बजै ताल बैना धुन सोई ॥७॥
बजै तार तंबूरे भाई । बजै मृदंग नफीरी आई ।
सारंगी संहतार अपारा । बाजे बजे इत्यादिक सारा ॥८॥

सबका सुर इकताल बजावैं। मीठेसुर बहु देवा गावैं।
हाथन की अंगुरी पै आवैं। अपसर बहुती निरत करावैं ॥६॥
ऐसे देव हरी तब जावैं। ऐसे भक्ति करैं पुन्य लावैं।
जैजै शब्द करैं मुख सोई। ताकरि पाए मैल निज धोई ॥१०॥
ऐसे तौर हर सुरतहां जावैं। वा खगराज भक्त वश आवैं।
सोभी वहु विध सेवा ठानैं। भाव समान महा पुन्य आनैं ॥११॥

या विध सुर खग कर नित सेवा। ऐसा मेर थान शुभ देवा।
विद्युनमाली मेर सुथाना। कवलों करों गुननका गाना ॥१२॥
तातैं जो भव पुन्यको चाहो। तौ या मंदिर को शिर नाहो।
यह तीरथ शिव साधन ठामा। पुन्य बधन को है भत्र दामा ॥१३॥

दोहा—विद्युनमाली सेवतें पाप नसे भय खाय।

जे भव पूजे भाव सों ते निहचै शिव जाय ॥१४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

(इति विद्युन्मालिमेरु पूजा समाप्त)

 **आगै समुच्चय जयमाला** 

दोहा—मेरु सुदरशान जानिये, विजय अचल शुभ ठाम ।
मंदिर विद्युन्मालिया पाचों यह शुभ धाम ॥ १ ॥

मुणयणाणंदकी चाल—

दीप जंबू विपै मेर सूदरशाना । लाख जोजन कहा त्वंग नभ फरसना ॥
दूसरा धातकी खंड पूरव दिसा। मेर विजय महा शोभ जुत अतिलसा ॥२॥
धातुकि खंड पश्चिम दिसा जानिये। तीसरा मेरु शुभ अचल सुख मानिये॥

अर्ध पहुकर विषैं पूर्व दिस सारजी। मेर मंदर कहा चतुरथा धारजी ॥३॥
दिसा पच्छम तनी अर्ध पुहकर सही। पांचमा मेर विद्युनमाली कही ॥
चार यह मेर त्वंग सहस चौरासिया। कनक के सकल यह तीर्थ अघनासिया॥
एक इक मेर पै चार वन हैं सही। एक वन मांहि जिन थानचवा धुन कही॥
चार बन तनै मिलि भए षोडश थला। पाच मेरन तने चार वीसी फला॥५॥
मेर इक शैल गजदंत चव जानजी। पंच मेरन तनै वीस सुख थानजी ॥
पंच ही मेरके वृक्ष दश थाय हैं। सालिमल जंबू वृक्ष नाम शुभ दायहैं ॥६॥
मेर इक एक पट् कुलाचल सारजी। पंचके तीस वहु धरें विस्तारजी ॥
जान वैताढ चौंतीस इक मेरके। एक सत सतर पंच मेर शुभ घर कैं ॥७॥
जानि वक्ष्यार इक मेरके षोडसा। पंच मेरन तने असी गिन मोडसा ॥
इक्ष्वाकार दोइ धातकी खंडजी। दोइ गिन अर्ध पहुकर धरा मंडजी ॥८॥

सकल यह अकीरतम थान जानौं सही।इन विषैं सबन पै थान जिन शुभमही॥
पंच मेरनके सनबंध सब गाइये। तीन सत और चोरानवे पाइये ॥९॥
जानकों तौ सकत हीन हम हैं सही । भक्त वस भावना करत हैं इस मही ॥
आठही द्रव्यसुध लेय थुत गायजी॥जजतहों सकल जिनगेह हरषायजी॥१०॥
प्रोप पूजा करी राग हिरदें धरी। तासतें पुन्यकी पोट उरमें भरी ॥
तास फल भाव अति निरमले होगए।करो तब पाठ यहसुफल मानों भए ११
और सबजगत भ्रमजाल कविजानियो।एक जिन चरनको सरन सतमानियो॥
और नहीं आस यह चाहि जानों सही।हाथतें जजैंयह थान फिर शिवमही १२
दोहा—पंच मेरकी आरती और अकिरतम थान ।
तिन पद टेक नमो सदा जो चाहो सुध ज्ञान ॥१३॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥
इति पंचमेरु विधान समाप्त ।

❋ अथ मानुषोत्तर पर्वत के चार जिनालयों की पूजा ❋

अडिल्ल छंद—

पहुकर दीप सुमध्य भाग भूमें सही। मानपोतर गिर वलाकार कंचन मही।
तापैचवदिसचार अकीरतम जिन थला। सो पूजोंइस थान थाप उर निरमला १

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिचत्वारिजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत सवौषट् आहाननं।
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिचत्वारिजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिचतुर्जिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत सन्निधिकरणं (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक (चौपाई)

जीव रहित निरमल जल लाय। कनक पियाले धर गुन गाय।
पूजों मानपोत्र जिन गेह। जनम मरन मेंटे फल एह ॥२॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्व० ॥२॥

चंदन अगर घस्यौ जल डार। आछे पातर करलै धार।
पूजों मानषोत्र जिनगेह। भौ दुख ताप मिटे फल एह ॥३॥
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबांधजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदनं नि० ॥३॥
तंदुल उज्जल अखंड अनूप। कीनै शुद्ध धोय अनुरूप ॥
पूजो मानषोत्र जिन गेह। ता फल सिद्धलोक फल लेय ॥४॥
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंवंधिजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतं नि० ॥४॥
चांदी कनक कलपद्रुम जान। तिनके फूल गूंथ हम आन।
पूजों मानषोत्र जिन गेह। मदन रोग नाशै फल एह ॥५॥
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वनसंवंधिजिनालयेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥
नाना रस नैवेद वनाय। मोदक आदि किये कर लाय।
पूजों मानुपोत्र जिन गेह। वांछा रोग मिटी फल एह ॥६॥
ॐ ह्रीं मानुपोत्तरपर्वतसंवंधिजिनालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपा० ॥६॥

दीपक रतन मई मन लाय । पातर धर अति भावन भाय
पूजों मान षोत्र जिन गेह । मिथ्या मोह मिटै फल एह ॥७॥
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्व० ॥

चंदन अगर धूप कर सार । खेऊँ अगनि माहीं थुति धार ।
पूजो मानषोत्र जिन गेह । कर्म जरै ताको फल एह ॥८॥
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥ ८ ॥

श्रीफल और बदाम धुवाय । निरमल पातर धर गुन गाय।
पूजो मानषोत्र जिन गेह । मरन मिटै शिव ले फल एह ॥९॥
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्यो मोक्षपदप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।९॥

नीर गंध अक्षत पुष्प चरु सार । दीप धूप फल कर इक ठार ।
पूजो मानषोत्र जिन गेह । चउ गति भवन मिटै फल एह॥१०॥
ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तायाऽर्घं निर्वपामीति ॥१०॥

❁ अथ प्रत्येक अर्घ ❁

सोरठा-मानषोत्र गिर जान, ताकी पूरब दिस सही ।

हैं जिन थान सुमानि, सो पूजों वसु द्रव्य तें ॥१॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिशासंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

दक्षिण धरा मझार. याही गिर ऊपर सही।

तीरथ जिन थल सार, तें पूजों वसु द्रव्य तें ॥२॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिशासंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

मानपोत्र के शीश, पच्छिम दिशा जानौं सही ।

जिन थल सब जग ईश, सो पूजों वसु द्रव्य तें ॥३॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिशासंबन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

मानुपोत्र पै सोय, उत्तर दिशा को जो कहो ।

जिनवर थान सु जाये, सो हौं पूजौं भावतैं ॥४॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतोत्तरदिशासंबंधिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्व० ॥४॥

पुहकर अर्ध सुदीप, मानपोत्र के पार कौं ।
तहां उतपति क्षय कीय, सो सिध पूजों भावतें ॥५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमानुषोत्तरपर्वतादग्रे उत्पत्तिक्षयकाय अर्घं निर्वपामीति० ॥ ५ ॥

दोहा—याही पहुकर दीपका सागर है सुखदाय ।
ताकी उतपति छेद सो मैं पूजों थुति गाय ॥६॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपवेष्ठितसमुद्रस्योत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामी० ॥६॥

दीप वारुनी नीर निध वामें रचना जोर ।
सो या भू उतपति तजी ते पूजों मद तोर ॥ ७॥

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

इस वारित भू वेढ कें जो सागर जलरास ।
जाकी उतपति तिन तजी ते पूजों थुत भास ॥८॥

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपवेष्ठितसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपा० ॥८॥

दीप क्षीर वर है सही भोग भोम सुभ थान ।
ताकी उतपाति तिन तजी सो पूजौं धर ध्यान ॥९॥

ॐ ह्रीं क्षीरवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

क्षीर महासागर सही गुन को जान निधान ।
तामें उतपाति तिन तजी सो पूजों सिव थान ॥१०॥

ॐ ह्रीं क्षीरवरसमुद्रस्योत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

दीप घितवर शुभ धरा बहु जीवन को वास ।
तामें उतपाति तिन तजी ते पूजों होय दास ॥११॥

ॐ ह्रीं घृतवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

वेढि घिरत वर दीपकों जो सागर शुभ नाम ।
तामें उतपाति तिन तजी ते हु जजों शुभ थान ॥१२॥

ॐ ह्रीं घृतवरसमुद्रगतिछेदकायं अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

इक्षू वर है दीप सो त्रस थावर को ठाम ।
ताकी गति छेदी तिने सो हु जजों शुभ धाम ॥१३॥

ॐ ह्रीं इक्षुवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

वेढि परो इस दीपकों इक्षूवर दधि सोय ।
मरन जनम यामें तजे अर्घ सु पूजों जोय ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं इक्षुवरसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

अष्टम द्वीप नंदीश्वरा ताको बहु विस्तार ।
ताकी उत्पति तिन तजी सो पूजों भव पार ॥१५॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

इस पहुकर दीपादि दधि सकल जीवके धाम ।
तिनमें उतपति तजि गए सो पूजों सिव ठाम ॥१६॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपादारभ्य नंदीश्वरद्वीपपर्यन्तमुत्पत्तिच्छेदकायार्घं नि० ॥१३॥

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—पहुकर आधे दीप मध मानषोत्र गिर सोय।
कंचन वरनौ सैल पैं जिन थल बंदौ जोय ॥१॥

वेसरीछंद—तीजे दीप विषैं मध भागा। मानपोत्र परवत शुभ जागा।
वलयाकार त्वंग अति जानौं। मनुप लोक की हद्द प्रमानौं॥२॥
याके पार मनुख नहीं जावैं। देव जाय नाना सुख पावैं।
इस तैं परे कर्म भू होई। या गिर पार भोग भुमि जोई॥३॥
यह गिर मानपोत्र गिर राजा। कनक मई सबही सुख काजा।
तिस पैं चार दिसा में जानौं। कूट कहे सुंदर अधिकानौं ॥४॥
तिन कूटन में सुर के वासा। महल वाग वन अति सुख रासा।

तिन में एक एक सिध कूठा । चौ दिस चार जानिं अघ छूटा ॥५॥
चौ दिश सिद्ध कूट पै जानौं । एक एक जिनवर का थानौ ।
सो थानक है अनादि अनंता । बिना किये जानो सब संता ॥६॥
कनक मई सब गेह जिनंदा । रतन बिंब तिनमें सुख कंदा ।
पूजें देव खगा थुति गाई । भूम गोचरी पहुँच न पाइ ॥७॥
बंदेतें पातक खय जावैं । पुन्य हीन नाहिं दरशन पावैं ॥
सो हम अलप पुन्य के धारी । तातैं हमको दरशन भारी ॥८॥
ऐसी जान पुन्य के काजैं । तिन जिन मंदिर पूजा साजैं ।
पहुँचन कीतो सकती नाहीं । करैं भावना अति हरपाहीं ॥९॥

दोहा—मानपोत्र पै जिन भवन चव दिस चार बखान ।
तिनकौ हम यहां जजत हैं अरघ आठ द्रव्य आन ॥१०॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसंबंधिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ॥१०॥

(इति मानुषोत्तरसंबंधिजिनचैत्यालय पूजा समाप्त)

❋ अथ नन्दीश्वर दीप पूजन विधान ❋

अडिल्ल छंद—

अष्टमदीप नँदीश्वर बहु विस्तारहै। ताके चव दिस बावन गिर मनि धार हैं
तिन सबपै जिनथान कहे बावनसही। सोइहां थापन थाप जजौं पुन्य कीमही

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टान्हिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापञ्चाशज्जिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् (आह्वाननम्)

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टान्हिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापञ्चाशज्जिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टान्हिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु

द्वापञ्चाशज्जिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ अष्टक (छंद गीता)

शुभ नीर निरमल त्रस सुजियबिन गंग धारा को सही।
धर पात्र सुन्दर हाथ अपनै वचन करि मुख थुति कही ॥
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहां।
इम जान नंदीश्वर तनै जिनथान जल जज हों इहां ॥२॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं निर्व० ॥२॥
लै बावनौं गंध खानि चंदन नीरतैं घासि लाइयो।
कर कनक पातर धार लीनो महा उर हरपाइयो ॥
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष कों मोसर कहां।
इम जान नंदीश्वर तनैं जिन थान चंदन जज इहां ॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो। संसारतापविनाशाय चंदनं नि० ॥३॥

बिन खंड अक्षत धवल उज्जल बीन नव शुभ लायजी ।
कर सुभग जलतें धोय नीके बीनती मुख गायजी ॥
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजें मनुष को मौसर कहां ।
इम जान नंदीश्वर तनें जिनथान अक्षत जज इहां ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति ।४.

सुखदाय पहुप सुगंध राशी वरन नाना जानिये ।
वहु घाटि धारी लाय करतें माल कर हित मानिए ॥
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजें मनुष को मौसर कहां ।
इम जान नंदीश्वर तनें जिनथान पहुप सुजज इहां ॥५॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥५॥

नैवेद षट रस तुरत लाकै सुभग मोदक हम लये ।

धर थाल कंचन धार करमैं भावको निरमल ठये ॥
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुप को मौसर कहा।
इम जानि नंदीश्वर तने जिनथान चरु जजहो इहां ॥६॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा
मण दीपिका तम नाश करता जोतके धारक सही।
लै आरती गुन गाय जिनके भावना इम उर लही ॥
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुप को मौसर कहां।
इम जान नंदीश्वर तनैं जिन थान दीपक जज इहां ॥७॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति०
कर धूप दश विध गंध लेकै महा परमल दायजी।
लै आपने कर माहिं थुतिकर अगनि में धरवायजी।

तहा इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुप को मौसर कहा ।
इम जानि नंदीश्वर तनें जिनथान धूप जजौं इहां ॥८॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मेन्धनदहनाय धूपं निर्व० ॥८॥

श्रीफल बदाम अनार खारक और पुंगीफल भले ।
इन आदि निरमल लाय फल हों देव जिन पूजन चले ।
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजें मनुप को मौसर कहां ।
इम जानि नंदीश्वर तनैं जिनथान फल जज हो इहां ॥९॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो मोक्षफलंप्राप्तये फलं नि० ॥९॥

लै नीर चंदन तंदुला पुष्प और चरु दीपक कहे ।
धर धूप फलकर अर्घ करलै भावना भावत भए ॥
तहां इन्द्र सुरही जाय पूजें मनुप को मौसर कहा ।

इम जानि नंदीश्वर तनैं जिन थान अर्घ जजौं इहां ॥१०॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो ऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामी० ॥ १० ॥

❀ अथ जयमाला ❀

सोरठा-नंदीश्वर शुभ थान, अष्टम ताकी चौदिशा।
बावन जिन थल मान, सो पूजौं कर आरती ॥१॥

वेसरीछंद—याही अष्टम दीप मभ्कारा। जिन पूजन आवैं सुर सारा।
इम उतकृष्टी प्रतिमा जानौं। धनुष पांच से त्वंग बखानौं ॥२॥
रूप महा कौलों कवि गावैं। जिन तन से सब लच्छन पावैं।
मुद्रा सांति घ्राण दिठ देखैं। पदमासन कायोत्सर्ग पेखैं ॥३॥
पूरब दिशा वा उत्तर भाई। श्रीजिन विंब तनैं मुख पाई।
सो सब विंब रतन मय होई। दीखै इम परतक्ष जिन जोई ॥४॥

वहु विस्तार धरें जिन गेहा। ताके लखत होय वहु नेहा।
कटक बाग बन शोभा धारी। लगे शिखर नभ मिलन पधारी॥५॥
धुजा कल्प वृछ तोरण धारैं। रतन तूप मंगल द्रव्य सारे॥
प्रातहार्य वसु शोभ अपारा। मणि मंडप नभ माहिं सिधारा॥६॥
नाटसाल तहां भक्त करावैं। देव तहां नाटे सुरधर गावैं॥
सुर म्यंदरि पंकति सुखकारा। तहां अमर धर्मकी उतसारा॥७॥
महिमा तिनकी कवलौं गावैं। जिन जानै कै जिन धुनि पावैं।
वासुर इन्द्र जाय सो जानैं। वाकी तौ सामान्य बखानैं।८॥
जे जिन मंदिर गुमरत भाई। पाप कटैं पुन्य वंध कराई।
तौ दरशान की महिमा सारी। कहे कौन फलकी विधि भारी॥६॥
दोहा—तातैं नंदीश्वर विषैं जे हैं जिनके थान।

सो भव सुमरो थुति करो पूजो शुभ फल धाम ॥१०॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

❀ आगे प्रत्येक दिशासंबंधी पूजा ❀

तहां प्रथम पूर्व दिशा पूजा (गीता छंद—)

जाय नंदीश्वर सु अष्टम दीप की पूरव दिसा ।
लक्ष एक अंजन चार दधि गिरि आठ रतिकर गिर लसा ।
तिन ऊपरें जिन थान इक इक थाप सो इहां भायजी ।
हौं जजों मन वच काय भावन गात सकत न थायजी ॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्रावतरतावतरत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम् । (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक (अडिल्ल छंद)

निरमल जलहम लेयकनक पातरधरौं। अपनो तनजल धोय सपरकें सुधकरौं
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानहैं। सोहों जलतें जजौं महा थुतिआनहैं ॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशायजलं नि०

चंदन आनि सुगंध भमर मन मोहनौं। करके भाव विशुद्ध पात्रलैसोहनौं।
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानह। सोहौं चंदन लाय जजौं थुतिआनहैं॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चन्दनं॥२॥

अक्षत उज्जल खंड विना लाए सही। धार मनोहर पातर अपने कर लही॥
नंदीश्वर पूरव दिश जे जिन थानहैं। सो अक्षत तें जजों भक्त विध ठानहैं॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तायाक्षतं नि० ॥४॥

देव द्रुमके पुष्प महा गंध धारजी। तिनकी गूंथी माल आपकर प्यारजी।
नंदीश्वर पूरव दिसजे जिन थानहैं। सो पूजौं पुष्पलाय घनें ताजिमानहैं॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनायपुष्पंनि० ॥५॥

नाना रस नैवेद भेद बहु लाइयौ। मोदक आदि अनूप कंठ गुण गाइयौ।
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानहैं। सो पूजौं नैवेद आप ताजि मानहैं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशि त्रयोदश जिनालयेभ्यः क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं नि० ॥६॥

दीपक मणमय सार तासतें तम नसै। सो भर कंचन थाल हाथमेंसो लसै।
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानहैं। सो दीपक तै जजौं भक्त उर आनहैं ७

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारनाशाय दीपंनि० ॥७॥

चंदन अगर मिलाय धूप कीनी सही।सो लै अपने हाथ अगनि माहीं दही
नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थान हैं।सो पूजों लै धूप हिये धर ध्यान हैं ॥८

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०॥८

श्रीफल लोंगवदाम औरखारक सही।इत्यादिक फलल्याय घालि प्रातरमही॥
नंदीश्वरपूरब दिशजो जिनथानहैं। सोहोफलतें जजौंमहा थुतिगानहैं।९

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥९॥

जलचंदन अक्षत पुह चरु दीपक सही। धूप फला यह आठ अरघ इनकी लही

नंदीश्वर पूरब दिशजे जिन थानहैं। सो मैं पूजों अरघ थकी थुतिआनहै १०

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं नि१०

प्रत्येक अर्घ। (अडिल्ल छंद)

नंदीश्वर पूरब दिश अंजन गिर सही। ताऊपर जिनथान अकीर्तम पुनमही॥

जानैं को बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं ॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायामञ्जनगिरिसम्बन्धिजिनालयायाऽर्घं नि० ॥ १ ॥

याही अंजन गिरके पूरव दिससही। दधिगिर एक महान जहांजिन थलमही॥

जानैं कों बल नाहिं भावना यहां कैंर। अष्ट द्रव्यतैं पूज आपनै अघहरैं ॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरदीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशादधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं नि० २

अंजनगिरपूरबदिशवापिक मुखकहो। रतिकर गिर ता शीशथान जिनवररहो

जानैं कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं ॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेःपूर्वदिशावापीसम्बन्धिप्रथमरतिकरस्यजिनालयायार्घं

याही वापी के मुख रतिकर दूसरा। ताऊपर जिन भवत तीर्थ अघ मलहरा।

जानैं कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वांजनगिरेः पूर्वदिशावापीसंबंधिद्वतीयरतिकरस्यजिनालयायार्घं

पूरवदिशअंजन गिरकी दक्षिण दिशा। वापिक में दधगिरा तहांजिनथललसा।

जानैं कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं॥५॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः दक्षिणदिशासंबंधिवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बंधि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

पूरब अंजन दक्षिण वापी मुखसही। रतकर प्रथम बखान तहां जिनग्रहमही।

जानैं कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनैं अघहरैं॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं नि०

याही वापिक के मुख द्वतिया रतिकरा।ता ऊपर जिनथान महा पातिक हरा।
जानैं कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं ॥७॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं नि०
नंदीश्वर पूरब अंजन पच्छिम दिसा।वापिक मध दधिगिरा तहां जिनथलबसा।
जानैं कों वल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं॥८॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्ये दधिगिरिसंबंधि जि० अर्घं नि०
याही वापिक केमुख प्रथम सु रतिकरा। तापै जिनका भवन महा तीरथ घरा॥
जानैं कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं ॥९॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं नि०
दूजो रतिकर याही वापिक मुख कहो। ता ऊपर जिन भवन अकीरतम वनरहो॥
जानैं कों वल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं॥१०॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं नि०

नंदीश्वर पूरब अंजन उत्तरसही। वापिक मध दधि गिरा तहां जिन थलकही।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनैं अघहरैं॥११॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः उत्तरदिशासंबंधिवापिकामध्ये दधिगिरिसंबंधिजि० अर्घं
याही वापिक के मुख प्रथम सु रतिकरौ। ताके ऊपर जिनकौ थानक अवतरौ।
जानैं कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरैं॥१२॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः उत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधि जि० अर्घं नि०
याही वापिक मुखपर रतिकर दूसरा। ता ऊपर जिन गेह सकल पातिक हरा।
जानै कों बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघहरै॥१३॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वांजनगिरेः उत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं नि०
ऐसेनंदीश्वर पूरव दिस गिरसही॥तिन त्रयोदश पै इक इक जिन थल धुनिकही
जानै को बल नाहि भावना यहां करैं। अष्ट द्रव्यतें पूजआपनैअघ हरैं॥१४॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिश्येकांजनगिरिचतुर्दधिगिर्यष्टरतिकरेतित्रयोदशजिनालये

भ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा– नंदीश्वर पूरब दिसा अष्टम दीप मझार।
त्रयोदश जिनके थान हैं सो पूजौं थुति धार ॥११॥

छंदवेसरी— पूरब दिस नंदीश्वर माहीं। एक महा गिर अंजन पाहीं।
ढोलाकार गोल आकारा। श्याम रतन का है पिंड सारा ॥२॥
जोजन सहस चौरासी सारो। धरती तैं नभ माहिं उचारो।
इतनें जोजन ही सुन भाई। है तिसँ व्यास भौम चौड़ाई ॥३॥
जेता त्वंग व्यास जे ताई। नीचे ऊपर इक सा पाई।
जाकी जोति सबे भू व्यापी। नासकिया तम धर परतापी॥४॥
महा मनोज्ञ शिखर यह होनो। इसतें लख जोजन चवकोनो ॥

अंतर एता जाय सुभाई। चव दिस चार वापिका पाई ॥५॥
सो वापिक भी भिन भिन गाई। लाख लाख जोजन बतलाई।
ए लंबा विस्तार बताया। एता ही तिन व्यास सुगाया ॥६॥
चौखूटी वापिक आकारा। कंचन पाल महा दृढ़ धारा।
मुख लौं जल भरया अति सोहै। चलें तरंग लखत मन मोहै ॥७॥
तिन चारित में विच बिच जानौं। एक एक दाधिगिर सुखदानौं।
श्वेत वरण मणि फटिक समाना। लंबे चौड़े इक से जाना ॥८॥
ए भी ढोलाकार वताये। दस दश सहस जोजना गाए।
इनही इक इक वापी जानो। मुख पै दो दो रतिकर मानौं ॥९॥
ऐसे एक दिसाके भाई। त्रयोदस गिर गाये सुखदाई ॥
इन सव पै इक इक जिन थाना। सोहों जजौं छांड़ि सब माना। १०

दोहा—यह जिन मंदिर माल शुभ जो भव कंठ धराय ।

सो ता कीरत औंर कों सुर हरषै जस गाय ॥११॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पूर्वादिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं नि० स्वाहा ॥

इति पूर्वदिशा पूजा समाप्त ।

❀ अथ दक्षिणदिशा संबंधि जिनालय पूजा ❀

चौपाई—नंदीश्वर दक्षिण दिस जाय । त्रयोदश जिनके थान सुठाय ।

जान सक्त तो दीसे नाहिं । तातें जजौं थाप इह ठाहिं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रियोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं ॥ (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथाष्टक

गीताछंद—नीर नीकौ क्षीर दधि सो जीव बिन प्राशुक इसौ ।
धर कनक झारी माहिं करले कहौ गुन मुख शुधि जिसौ ॥
जिन थान दक्षिण दिसनंदीश्वर तहाँ विंब जिनराय हैं ।
सों जजौं मन वच काय सुध तें लाय जल सुखदाय हैं ॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशायाः अंजनगिरौ चत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेतित्रयोदश जिनालयेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

घसि नीर चंदन बावना शुभ गंध की धारा सही ।
लै सुभग पातर विनय सेती जानके तीरथ मही ॥
जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहाँ विंब जिनराय हैं ।
सो जजौं मन वच काय चंदन लायके थुति गायहैं ॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपदक्षिणदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यो चन्दनं निर्वपामीतिस्वाहा ॥२॥

अक्षत सु उज्जल खंड नाहीं शुद्ध नख सिख जानिये।
फिर धोय निरमल धार पातर आपनै कर आनिये।
जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहाँ बिंब जिन रायहैं।
सो जजौं मन बच काय शुद्धकर अखत तें हित लायहैं ॥३॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्योऽक्षतं निर्वपामीतिस्वाहा ३॥
फूल प्रासुक कनक चांदी तथा सुर तरु के सही।
लै माल तिनकी करी चित दे आपनै करमें लही।
जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वचकाय फूल सु लाय आति सुख पायहैं ॥४॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा४
नैवेद्य सुन्दर सुभग रसना लाइया हित कारने।
ले आपने कर धार पातर भूख को मद मारने

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वचकाय सुधि नैवेद्य शुभ गुन लाय हैं ॥५॥

ॐ ह्रीं नदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशाजिनालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

दीप मणिमय अंध नाशक महाजोत धरा सही।
धर भले पातर आरती शुभ आपनै करमें लही।
जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहा विंब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय सुद्ध कर दीप तें जसगाय हैं ॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

कर धूप दिस विध गंध लेके पीस सकल मिलायजी।
हौं आपने कर हरप धरकें अगानि खेवन आयजी ॥

जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वचकाय सुधतें धूप सू जिन पाय हैं ॥७॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल वदाम सु ले सुपारी खारका सुख दायना।
इन आदि और अनेक फललें सुभग सब मन भायना।
जिन थान दक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वचकाय शुभ तैं आयकर फल लाय हैं ॥८॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जल गंध अक्षत पुष्प चरु ले दीप धूप फला सही।
कर अरघ सब द्रव्य एकठे करि आपने कर में लही ॥

जिन थान दाक्षिण दिस नंदीश्वर तहां बिंब जिनराय हैं ॥६।
सो जजौं मन वचकाय शुभकर अरघतें थुति गाय हैं ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

❀ अथ प्रत्येक अर्घ ❀

गीता छन्द—नंदीश्वर दाक्षिण दिसा को जान अंजन गिर सही।
तिस ऊपरै इक थान जिन है पाप हरने की मही॥
तहां देव ही तो जाय पूजैं और को मौसर कहां।
इम जानि पुन्य के लोभ काजैं भाव अरघ जजैं इहां॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशांजनगिरिसंबंधिजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति ॥१॥

द्वीप दाक्षिण दिस नंदीश्वर अंजन गिर पूरब मही।
लखि वापिका मध शिखर दधि गिर तास पै जिनथल सही॥

॥४६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाञ्जनगिरेः पूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालया-
याघँ निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

इसही जु वापिक तन मुख पै जानि रितिकर आदि जी ।
ता ऊपरैं जिन थान है शुभ जजैं सब अघ वादिजी ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालया-
याघँ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

याही जु वापिका तना रतकर दूसरा गिर जानिये ।
ता ऊपरे जिन थान तीरथ आकेरतम ध्रुव थानिये ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजिनगिरेः पूर्ववापिकासंबंधिजिनालयायार्घं नि०॥४॥

अँजन गिर दाक्षिण दिसाका तास की दाक्षिण मही ।
है वापिका मध्य शिखर दाधिगिर तास पै जिनग्रह सही ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालया-
याघँ निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

याही जु वापिक मुख सु ऊपरि कही पाहिला रतकरा।
ता ऊपरें जिन भवन दीरघ किये पापन का हरा ॥तहा०॥६

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनाल-यायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

वापिका इस तनै मुख पै कहा रतिकर दूसरा।
तिस शीश थानक जिनेसुर का देखतें पातक हरा ।तहां ॥७॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिना-लयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

दक्षिणदिस अंजन गिरीकी पच्छम दधिगिर वापिका।
तहां थान देव जिनेंद्र जू का करो भव्य तिन जापिका ॥तहां॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्यदधिगिरसंबंधिजिनाल-यायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

इस वापिका के मुखै रतकर नाम प्रथम सुगिर सही ।
तिस ऊपरे जिन भवन अघहर सकल मंगलकी मही ।।तहां० ।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

दक्षिण अंजन पाश्चिम वापिक मुख करै रतकर हुजा ।
ताके सु ऊपर भवन जिनको एकही धर्मकी ध्वजा ।।तहां०।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।। १० ।।

दीप नंदी दक्षिण अंजन तास उत्तर वावरी ।
ता मध्य दधिगिर सीस जिन थल भव्य संग मंगल करी।।तहां ११

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायाऽर्घं

या वावरी सुख जान रतिकर प्रथम ही सुख दायजी ।

ताके सु ऊपर जोय मंदिर देव जिनका पायजी ॥तहां० ॥१२।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

इसही जु वापिक नोक ऊपर जान रतिकर दूसरा ।

तिस जाय मस्तक भला राजै देव जिन मंदिर धरा ॥तहां० ॥१२

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणाँजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १३ ॥

अडिल्ल छन्द—दाक्षिण अंजन दधिगिरि चव वसु रत करा ।

इन पै इक इक थान देव जिनका खरा ।

तहा देव ही जजैं जाय गुन गाय हैं।

हम इहां पूजैं अर्घ भावना भाय हैं ॥१४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाःएकअंजनगिरिचत्वारिदधिमुखाष्टरतिकरेतित्रयोदशजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—नंदीश्वर दक्षिण दिसा कहे सु जे जिन गेह।
हम पूजैं भावैं यहां सुर जजं हैं कर नेह ॥१॥

वेसरी छंद—नंदीश्वर तौ दीप अपारा। ताकी दक्षिण दिस सुख कारा।
अंजन गिर तौ एक वताया। ता ऊपर चव वापिक भाया ॥२॥
तिन वापिक के मध्य अनूपा। एक एक दधिगिरि शुभ रूपा।
तिन वापिन की नोंकन ठाहीं। दोय दोय रतिकर गिर पांहीं ॥३॥
तुंग व्यास रचना है तैसी। पूरव दिसा कही थी जैसी।
यहां वहां फेर रच नहिं जानों। दिसा विशेष और नहिं मानों॥४॥
यह सब थान तीर्थ हैं जोई। देखत दरस पाप क्षय होई।
नाम लियैं जिय मंगल पावैं। सो पूजन महिमा किमि गावै ॥५॥

या पूजा फल तें सुन भाई । शोक दोष उपजै न कदाई ।।
सकल व्याधि तनकी मिटजावे । जो जिय यह पूजा मन भावे।।६।।
याही पूजा के पर भावा । सिरीपाल तन कुष्ट गमावा ।
सो आतम सुरके सुख पावे । जो जिय यह पूजा मन भावे ।।७।।
होय फेर चक्री बलभद्दा । कामदेव आदिक सुखहद्दा ।।
कै शिव वा अहमिंद्र जावै । ते जिय यह पूजा मन भावै ।।८।।
फेर चवै मोटे पद पावै । राज्य भोग फिर तप मति लावै ।
काट कर्म शिव रूप कहावै । ले जिय यह पूजा मन भावे ।।९।।
और कहा फल अधिक सुभाई । तातैं नंदीश्वर चल जाई ।।
जो जग फेर न आवै जावै । ते जिय यह पूजा मन भावै।।१०।।

दोहा—तेरह गिर पै जिन भवन तेरह ही मन लाय ।

नंदीसुर दाच्छिन तरफ सोहम भाव जजाय ॥११॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासंबंधित्रयोदशजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

इति दक्षिण दिसा पूजा संपूर्ण ।

❀ आगै पश्चिम दिसा संबंधि जिनालय पूजा ❀

चौपाई—नंदीश्वर पच्छिम दिस जोय । त्रयोदश जिन मंदिर हैं सोय ।
तहां जान तौ समरथ नाहिं । यहां थापन कर जजौं सुठाहिं ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्हिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पश्चिम-दिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्हिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पश्चिम-दिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्हिकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पश्चिम-दिशि त्रयोदशजिनचैत्यालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत सन्निधिकरणं ॥

❀ अथाष्टक ❀

चौपाई—नीकोनीरं निरमलो सार । निरमल पातर करमें धार ।
नंदीश्वर पाच्छिम दिसजान । पूजों जिन मंदिर जल आन ॥१॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलंनि०
चंदन चारु अगर घासि और । कनक पियाले धर कर जोर ।
नंदीश्वर पाच्छिम जिन थान । सो मैं जजों गंध शुभ आन ॥२॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयं दशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदनंनि०
अक्षत मुकताफल से सार । उज्जल खंड रहित कर धार ।
नंदीश्वर पाश्चिम दिस जान । जिन थल पूजों अक्षत आन॥३॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०
फूल कलप तरु से गंध धार । नाना वरन आनि कर सार ।
नंदीश्वर पाश्चिम जिन थान । पूजौं फूल थकी हित आन ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नाना रस नैवेद बनाय। तुरत किये लायो थुति गाय।
नंदीश्वर पच्छम जिनथान। सो पूजों नैवेद सुआन॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशाय नैवेद्यं नि०

दीपक रतन मई तम हरा। सो हमने शुभ पातर धरा।
नंदीश्वर पच्छम जिन थान। सो मैं जजौं दीप शुभ आन॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपं नि०

धूप कपूर अगर मिलवाय। कीनी भली गंध जुत लाय।
नंदीश्वर पच्छम जिन थान। सो मैं पूजौं धूप सुभ आन॥७॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०।७।

श्रीफल सार बदाम अनूप। खारक पुंगीफल लै भूप।
नंदीश्वर पच्छम जिनथान। सो मैं पूजों शुभ फल आन॥८॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०॥८॥

जल चंदन अक्षत पुह जेय। चरु दीपक फल धूप सुलेय।
नंदीश्वर पच्छम जिन थान। सो मैं जजौं अरघ पुन्य दान॥९॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०॥९॥

आगे प्रत्येक अर्घ।

चाल जोगीरासे की

नंदीश्वर पच्छम दिस जानों अंजन गिर शुभ थानों।
ताके शीस विराजित ऊपर श्रीजिन मंदिर जानौं॥
जानैं को नहीं सक्त हमारी अरु पूजन मन भाई।
तातें मन वचकाय शुद्ध तें अरघ जजौं शिवदाई॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिसंबंधिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

याही अंजन गिर की पू रव दिसा वापिका जानौं।

ता मध दधिगिरि ऊपर जिन थल तीरथ अघको हानौं॥जानैं०।२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्घं नि०

पच्छिम अंजन गिरकी पूरबवापिक के मुख भाई।
है रतिकर गिर जिन थल तापैं पूजैं देवा आई॥जानैं०॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं नि०

इस ही वापिक के मुख ऊपर है रतिकर सुख दानौं।
ताके सीस कहो जिन मंदिर पाप हरन को थानौ।जानै०॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं ४

पश्चिम अंजन गिरकी दक्षिन वापिक के मध्य जोई।
है दधिगिर तिस नाम सीस पै जिनको थानक सोई॥जानै० ॥५॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्घं ५

याही वापिक के मुख जानो रतिकर पहिला होई।

तापै जिनजीका है मंदिर पूजन जोग्य सो जोई ॥जानै०॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं

इसही वापिक के मुख ऊपर रतिकर दूजा जानौं ।

ता ऊपर है श्रीजिनमंदिर पूजत जे धन मानौं। जानैको०॥७॥

ॐ ह्रींनंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं

नंदीश्वर पच्छम अंजन गिर ता पच्छम की वापी ।

ता मध्य दधिगिर ऊपर जिन थल पूजैं हरि सुर थापी ॥

जानैं को नहीं सक्त हमारी अरु पूजन मन भाई ।

तातें मन वचकाय शुद्ध तें अरघ जजौं शिवदाई ॥८॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्घं

इस ही वापिक के मुख जानौं पहला रतकर भापा ।

ताके ऊपर है जिन थानक सुरही पूजैं जाखा ॥जानै०॥६॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं नि०

या वापिक के ही मुख जानौं दूजा रतकर नीका ।
ताही के शिर है जिन थानक पाप हरत है जीका ।।जाने१०

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं

नंदीश्वर पश्चिम दिस अंजन ताकी उत्तर जानौं ।
है वापिक मध्य दधिगिर परवत ऊपर जिन थल मानौं।।जाने०११

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरसंबंधिजिनालयायार्घं नि०

इस ही वापिक के मुख आगे रतकर परवत पावै ।
ता ऊपर जिन थान कहो है सो पूजै सुख दावै।।जानैं० ।।१२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं

वापिक इसही के मुख आगे रतकर गिर सुख थानों ।
याके ऊपर है जिनजीको मंदर अति सुख दानों ।।जाने०।।१३।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनालयायार्घं

नंदीश्वर पच्छम दिस त्र्योदश हैं परवत मणि जैसे ।
तिन सब पै जिन मंदिर जानों पाप हरण थल ऐसे। जानें।१४।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्य पश्चिमांजनगिरिसंबंधित्रयोदशजिनालयेभ्योऽर्घं महार्घं नि०

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—नंदीश्वर पच्छम दिसा हैं त्र्योदश जिन गेह ।
कनक रतन मय सोहनों जजैं देवकर नेह ॥१॥

घेसरी छंद—पच्छम अंजन गिरको भाई । आदिक हैं तेरह गिर ठाहीं ।
तिनपे हैंजे जिनकेगेहा । तिन पद नमैं आनि सुर नेहा॥२॥
या पूजा फल दुःखको खोवै । या पूजा फल अघ मल धोवै ।
और पुरुप की कथा सुकेहा । जिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥३॥
पूजा करै हरै भव सोई । पूजाफल चउ गति नहिं होई ।

इस पूजन फल सुर द्रुम जेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥४॥
जे भव नंदीश्वर को जावें। पच्छिम दिसको प्रीत बढावें।
तहां कहे त्रयोदश जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥५॥
या पूजा जग में न भमावे। या पूजा फल ज्ञान बढावे।
पच्छिम नंदीश्वर जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा ॥६॥
इत जिन थान पूज ते ठानें। तिनकों तीन भवन बढ़ जानें।
भावत हैं हम तो जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥७॥
ए जिन भवन देखते भाई। लहै पुन्य अघ तुरत नसाई।
पूजे जो भव धरे न देहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा॥८॥
हम भी पूजन को फल चाहैं। अरु पूजन की भावन भावें।
हम तहां जजें सु औसर है ग्हां। जिन पद नमें आनि सुर नेहा॥९॥

यह नंदीश्वर पश्चिम थाना । जिन पद नमें तिन पुन्यवाना ।
हीन संक्त धर लखै न जेहा । जिन पद नमें आन सुर नेहा॥१०॥
सुर जो पूजे वारंवारा । जो जो अवसर आवै सारा ।
मनुप विचारो पहुँचे केहा । जिन पद नमें आन सुर नेहा॥१०॥
कव नंदीश्वर अवसर आवै । जव इस थल हम भावन भावै ।
जाकर ही पुन्य पावै जेहा । तिन पद नमें आनि सुर नेहा ।१२

सोरठा— जो व्हां के जिन थान, पूजों पद वसु द्रव्यतें ।
सो लहै अवचल ज्ञान, लोकालोक प्रकाशका ॥१३॥

ॐ ह्रीं कार्त्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षेऽष्टान्हिकामहामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति पश्चिम दिशा पूजा समाप्त ।

❀ अथ नंदीश्वरद्वीपकी उत्तरदिशा की पूजा ❀

पद्धरी छंद ।

नंदीश्वर उत्तर दिश्य जान । त्र्योदश जिन थानक सुभ बखान ॥
सो जजों थाप इस ठाम सोय । नाहिं वहां जानकी सक्ति मोय॥१॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् ।
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र मम संनिहितानि भवत भवत सन्निधिकरणम् (पुष्पाञ्जलि निक्षिपेत्)

❀ अथाष्टक ❀

वीर जिनंदकी चाल—

जलले गंगा भारको जी निरमल तरसन पाय,
सुभग पात्र धर लाइयोजी पूजनको जिन पाय ।

उत्तरदिश जिन थानजी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशाय जलं

चंदन बावन नीरतें जी घसि कर पातर धार।

लई अरघ कर आपनैजी पूजन जिन भव वारि। उत्तर॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशाय चंदनंनि०

अक्षत सार सुहावनाजी मुकता फलसे जोय।

खंड विना शुभ वीनके जी पूजों जिन पद सोय॥उत्तर०॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्नि०

फूल मनोहर गंधकाजी वरन भले सुखकार।

कलप वेलसे लाइयां जी पूजन जिनपद सार॥उत्तर० ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पंनि०

नाना रस नैवेद लेजी मोदकादि वनवाय।

पातर शुभमें घालिकेजी जिनके पूजों पाय ॥ उत्तर० ।।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो क्षुद्रोगविनाशनाय नैवैद्यंनि०

दीपक मणिमय सोहनाजी भली जातिके धार ।

तिनकी कर शुभ आरतीजी, पूजों जिनपद सार।। उत्तर०।।६।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशाय दीपंनि०

धूप करी शोभा मईजी, अगर चंदना लाय ।

सकल पीस इकठी करीजी,पूजन को जिन पाय। उत्तर० ।।७।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मेन्धनदहनाय धूपंनि०

श्रीफल लौंग वदाम लेजी खारिक पिस्ता लाय ।

पुंगी फल आदिक फलों तैं पूजौं जिनके पाय ।। उत्तर०।।८।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।।८।।

जल चंदन अक्षत सही जी पहुप भले नैवेद ।

दीप धूप फल अर्घ लेजी पूजौं जिन निरखेद ॥ उत्तर० ॥६ ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि ॥६॥

अथ प्रत्येक अर्घ । (अडिल्ल छंद

नंदीश्वर उत्तर दिशागिर अंजन सही। ताके ऊपर है जिन थानक पुन्यमही ॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसंबंधिजिनालयायार्घं नि० ॥ १ ॥

या अंजन गिर पूरव वापी है सही। ता मध दधिगिर सीस थान जिनशुभमही ॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिशांजनगिरेः पूर्वत्रापिकामध्यदधिगिरसंबंधिजिनालयायार्घं

इस ही वापिक के मुख रतकर जानिये। तापै है जिन भवन महा पुन थानिये ॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपूर्वदिशत्रापिकाग्नखपथमरति कर'संबंधिजिना०

इस वापिक के ही मुख जानौं रतकरा।ता ऊपर जिन थान सकल-पातक हरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां॥
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकर संबंधिजिनालयायार्घं
उत्तर नंदीश्वर अंजन दक्षिण सही।वापिकमधदधिगिरिऊपरजिनथलमही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहां।हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां॥
ॐ ह्रींनंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःदक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालयायार्घं
या वापिक के मुख ही रतकर गिर सही।ता ऊपर जिन थान अकीर्तमशुभमही।
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहां।हम तौ भावन भाय अरघ जाजि हैंइहां।
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिनाल
यायार्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥६॥
या ही वापिक के मुख रतकर दूसरा। तापै जिनका थान महा शुभ तें भरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहां।हम तौ भावन भाय अरघजजिहैंइहां।
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिनाल-

यायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

उत्तर अंजन गिरकी पच्छमजानियेवापिक मधदधि गिरपै जिन थलमानिये
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पद तहांहम तौ भावन भाय अरघजजिहैं इहां

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपश्चिमवापिकामध्यदधिगिरसंबंधिजिनाल
यायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

या ही वापिकके मुख ऊपर रतकरो । तापै जिनथानक है सो हम अघहरो ॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पदतहां । हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधिजिना
लयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

इसही वापिकाकेमुखजानो रतकरा । तापैजिनकोथान भाविनको अघहरा
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पदतहां । हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेःपश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधि जिना
लयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

नंदीश्वर उत्तर अंजन उत्तर सही । मध्यवापिका दधिगिरपै जिनथलमही ॥

सुरतौ परतछ जाय जजैं जिन पदं तहां। हमतौ भावन भाय अरघजजहैंइहां॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरिसंबंधिजिनालया-याघं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

इस ही वापिकके मुखऊपर है सही। रतिकर के सिरऊपर जिन थलकी मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पदतहां। हम तौ भावन भाय अरघजजहैंइहां॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसंबंधि जिनल-यायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

याहीवापिकमुखऊपर रतकर कहा। तापै जिनथल जान हरप मन में लहा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पदतहां। हमतौ भावन भाय अरघजजहैंइहां॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसंबंधिजिना लयायाघं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

नंदीश्वर उत्तर दिसको इम जानिये। त्र्योदश जिनके थान महा पुन्य खानिये
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिन पदतहां। हमतौ भावन भाय अरघजजहैंइहां॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसंबंधित्रयोदशचैत्यालयेभ्यो महार्घं ॥१४॥

❀ अथजयमाल ❀

दोहा——नंदीश्वर उत्तर दिसा कहे, जिनेश्वर थान ।
तिन की थुति भापूं सही, करो मोहि अघ हानि ॥१॥

वेसरी छन्द—नंदीश्वर उत्तर को जानों । है जिन भवन पाप हर थानों ।
पतरछ तौ जहां अमरा जावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥२॥
देवन को मौसर है भाई । करें वीनती भक्ति उपाई ।
ताके फल सिव मारग पावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥३॥
मुनि गणधर को मौसर नाहीं । दरसन नंदीश्वर के माहीं ।
तौ औरन की को मुख गावै । हम से दीन भावना भावै ॥४॥
इन्द्रन की सक्ती है भारी । और देव सव पुन्य अधिकारी ।
नंदीश्वर जप पूज करावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥५॥

नंदीश्वर उत्तर को जानौं । पूजैं फिर जिन जी को थानौं ।
ते या भव में उच्च कहावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥६॥
सफल भवांतर तब ही मानौं । जब होवे नंदीश्वर जानौं ।
पूजैं जिन अर पुन्य बढ़ावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥७॥
यहाँ तौं विनती हम इम ठानैं । देव जिनेश्वर गुणकर गानैं ।
अहो देव सब अंतर पावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥८॥
अब जिन देव करो विधि ऐसी । नंदीश्वर पूजे जिन जैसी ।
औरैं घनी मुख कब लौं गावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥९॥
दीन दयाल भाव की जानौं । तातैं कहे न परे कहानौं ।
मनासा पूरी कर कवि गावैं । हम से दीन भावना भावैं ॥१०॥

दोहा—ऐसी विनती करन कौं, मनसा रहै अपार ।
नंदीश्वर कब जाय हम, उर की करैं पुकार॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टान्हिकामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति उत्तर दिशा पुजा।

❀ अथ समुच्चय आरती ❀

दोहा—अष्टम दीप नँदीसुरा, उत्तम तीरथ थान।
मनुष देह पहुंचे नहीं, पूजें सुर पुन्यवान १॥
ताकी गुण माला कहौं, सुनों संत धर भाव।
जा सुनि वहां चलनों चहे, बढ़ै राग चित चाव ॥२॥

* भुणयणानंद की चाल *

दीप दधमाल की कथा सुखदाय है। सुनै उर धरै तब ज्ञान बहु पाय है।
दीप जंबू पहल लाख जोजन मही। मेर इक तास मध और रचना कही ॥३॥
तास को वेढि गिर चार दधि जानियै। ता विषै दीप बहु देव खग थानियै।
आदि दिग चार रचना घनी है सही। व्यास दो लाख जोजन लखोजिनकही

धातकी खंड पूजा गिरद भायजी । मेर जुग पूर्व पच्छम धरा पायजी ।
चार लख जोजना व्यास विस्तार है । और रचना घनी सुरत उनहार है ।।५।।
आठ लख जोजना समुद कालोदधा । ता परै तीसरा दीप पुहकर सधा।।
वीच ताके कहा मानपोत्तर सही। व्यास षोडश लखौ जोजना धुनि कही।।६।।
मेर जुगही कहे अर्ध पुहकर धरा। पूर्व पच्छम दिशा अधिक महिमा करा ।।
चार लघु मेर यह सहस चौरासिया। त्वंग पन जानि इम और धुनि भाषिया।७।
ता परै तीसरा समुद आवै वड़ा । लाख वत्तीस जोजन सुरत मे पड़ा ।।
दीप चौथा जुजन लाख चौसठ सही। समुद चौथा तनों व्यास सुनि अवरही
लाख इक सौ अठाइस जोजन कहा। पञ्चमा दीप विस्तार मुनि इम चहा ।।
छप्पन अधिक लख दोय सल होय जी।पांचमें जलधिकी कथा कहों तोहिजी
पांच सै लाख अरु अधिक वारा सही। दीप षष्टम सहस लाख चौबिस कही ।।
वीस हे लाख अरु अधिक अड़तालजी। जान इम समुद षष्टम जलापालजी
लाख चालीस सै अधिक छिनवै गिनौ ।सातमो दीप विस्तार जिन इम भनो।।

लांख इंक्क्यासि सै अधिक लख बानवै।सातमें समुद को व्यास इम जानवै॥
एक सै त्रैसट कोटि मन लाइये। अधिक लख और चौरासिया गाइये ॥
दीप अष्टम तनो इतो विस्तार जी।जान इम दुगुन दुगुनो सवै सार जी ॥१२॥
दीप अष्टम विषै चार ही दिस सही। चार अंजन गिरा स्याम मणिमय कही॥
वापिका चार दिश जानि पोडश वड़ी।वीच तिन सवन के दधिगिरा लखमड़ी
वापिका सकल जल खानि चव कूटि की । रतकरा तिन विषै जुगल जुग खूंटकी
सकल रतिकर गिनै होय बत्तीस जी। सवै गिर मेल होय वांवना दीस जी १४
सीस सब ही तनै गेह जिन राय हैं। जजैं भव जीव के सधै सव काज हैं ॥
गेह बावन सकल कनक रतना जड़े। बिंब जिन देव के अधिक उपमा भरे॥
मास कातिक तथा फाग मन लाय जी।जानि आसाढ़ इन सुकलपक्ष पायजी॥
इन दिना इंद्र सव देव संग लाय कैं। जाँय नंदीश्वरे दीप हरषाय कैं ॥१६॥
एक इक इंद्र दोय दोय पहरौं सही। एक दिस पूज जिन पदन को तिस मही॥
च्यार हर इमैं जिन पूज्य वसु दिन करै। शेप सुर सकल मुख शब्द जय उच्चरै

भक्ततैं भरगुन गान जिन गाय हैं । तास फल ही सकल पाप को दाहि हैं।।
एक भव पायकै मोक्ष जावै सही। भक्त जिन देव फल देय जिन धुनि कही ।।
देव विन मनुप तो जाय नहीं कोय जी। देवही तीन रित जजैं मद खोय जी।।
और भी दिनन मेंजात सुर सेव कों। नचै वहु गान कर जजैं जिन देव को ।।
नंदीश्वर जाय जिन पूजते देव भी । भास यहां पुन्य द्रव्य सो नहीं केव भी ।।
इन तनीक्रय इस वात आछी बनी। मोक्ष मग नय थकी मुनुप की शुभ गिनी।।
धन्य है जीव जे जाय नंदीश्वरा। जजैं जिन पाय थुति गाय पातिक हरा ।
वीनती यह जिन देहि ओसर इसो। जाय उस दीप प्रभु पाय पूजैंतिसो ।। २१
और नहीं चाह जिन सेव विन पाइये। रहे निश दिन इसी प्रभु गुन गाइये ।।
मोक्ष नहिं वने इम सेव तुम दे भली। वीनती सुनो जिन दया निधि सुखरली।।

दोहा—नंदीश्वर जिन गेह की,माल धरै गुन जेह ।
भली" टेक,, ताकी भई, पूजे जिन कर नेह ।।२३।।
कवहू" टेक,, निवार अघ, पूजत है तुम पाय ।

ता फल मंगल संपजै, जय जय जय जिनराय ॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति नन्दीश्वर पूजनविधान समाप्तम्

सम्मेदशिखरमाहात्म्य—पूजनसहित जवाहरलालकृत सचित्र ।=)

भक्तामर स्तोत्र—संस्कृत और भाषा— —)।

पंचमंगल—रूपचन्दकृत शुद्धपाठ— — —)

समाधिमरण दोनों—पं० सुरचन्द्र और द्यानतरायकृत —)

सम्मेदशिखरका फोटो—तस्वीरमें रखनेका —)॥

राजुलपचीसी—विनोदीलाल कृत— — —)

बाबुलपचीसी—और नेमिराजुलकेप्रश्नोत्तर की बारहमासी —)

निर्वाणकांड—प्राकृत और भाषा महावीर स्वामी की पूजा सहित)॥।

नरकदुःख कथन - भूदरदास कृत)॥

गुर्वावली—और मंगलाष्टक वृंदावनजी कृत)॥

अठारहनाते—छंद और वचनिका कुन्दनलाल तथा भूदरदास कृत शिक्षा जकड़ी भाषा)॥।

चौवीस तीर्थंकरोंके ५४ चिन्होंकी लावनी सहित —)।

साधुवन्दना—पं० बनारसीदास और भूदरदास कृत)॥

शिवपचीसी—और तेरह काँठिया)॥

ज्ञानपचीसी - और धर्मपचीसी)॥

मुनिराज का बारहमासा—ज्योतिषी जियालाल कृत)॥

शारदा अष्टक—और शास्त्रभक्ति समेत)॥

आलोचना पाठ—कठिन शब्दों पर टिप्पणी सहित)॥

वैराग्यभावना—और समाधि मरण)॥

अभिषेकविधान—(पार्श्वनाथस्तुति) दूसरी भूदरदास कृत स्तुति)॥

बारह भावना—मुन्शी मंगतराय कृत)॥

निशिभोजनकथा —निशिभोजननिषेधक लावनी समेत)।

ऊपरकी इकतीस पुस्तकोंमें से एक किसम की ५ लेनेसे ६ और १० लेनेसे १३ दी जावेंगी।

* दूसरोंकी नई छपाई पुस्तकें । *

जगन्नाथ प्रेस, राजघाट-काशी में छपा ।